3.3: RESEARCH PUBLICATIONS AND AWARDS

3.3.2: Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during last five years

3.3.2.1: Total number of books and chapters in edited volumes/books published and papers in national/ international conference proceedings year wise during last five years

Sr. No.	Name of the Teacher	Title of the Book/chapters Published
1	Dr. Kashid G.R.	Shabadakalash
2	Dr. Kashid G.R.	Sahitya Suman
3	Dr. Kashid G.R.	Maharshi Vitthal Ramji Shinde : Jeevan Aur Karya
4	Dr. Kashid G.R.	Amrital Nagar
5	Dr. Kashid G. R.	Shakuntika : Srujan Aur Drushti
6	Dr. Lingayat V.P	Veershaiva Sampraday Ani Varkari Sampraday : Ek Tulanatmak Anubandh
7	Dr Nainwad SK	Hindi Sahitya Ka Itihas
8	Dr Nainwad SK	Hindi Sahitya: Bhaktikaal
9	Dr Nainwad SK	Gulami : Itihas Ke Aayine me (Translated Book)
10	Dr Nainwad SK	Mrutyu Sundar Hai (Translated Book)
11	Dr Nainwad SK	Meri Aawaj Suno (Kaifi Azami : Jeevan Aur Shayari)
12	Jewalikar A.A.	Stress Managements For Library Professionals
13	Dr.N.R Doiphode	Covid-19 Impact and Response (Volume II)
14	Dr. K N Gaisamundre	Applied Research In Botany Volume-1
15	Dr.M.B.Gadekar	Integrating Communication Through Technology
16	Dr. Kashid G.R.	Maharaja Sayajirao Gaikwad Bhashan Sangrah Vol-02
17	Jewalikar A.A.	Dyan Vyavsathapan
18	Jewalikar A.A.	The Role of E-Resources in Libraries
19	Dr. K N Gaisamundre	Text Book of Fungi and Plant Diseases
20	Dr. Kashid G. R.	21 Vi Shati Ka Hindi Sahitya: Navvimarsh
21	Dr. K N Gaisamundre	Effect of Heavy Metals on Some Major Carps-A Histrological Study
22	Dr. Danane N.R.	Dr. Babasaheb Ambedakaranchya Vicharancha Marathi Sahityavaril Prabhav Va Mahatma Fule Yanche Jivan Karya
23	Dr. Waghmare V.H	A Tale of Solitude : Anita Brookner's Selected Protegonists
24	Dr. Kashid G.R.	Kavyalok
25	Dr. Kashid G. R.	Bharatiya Bhasaha Or Sahitya Chintan

(Dr. M.B. Gadekar)

Digitally signed by MANOJ BHAGWAT GADEKAR
Date: 2023.02.20 18:32:10 +05'30'

1

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार सम्पादित पाठ्यपुस्तक

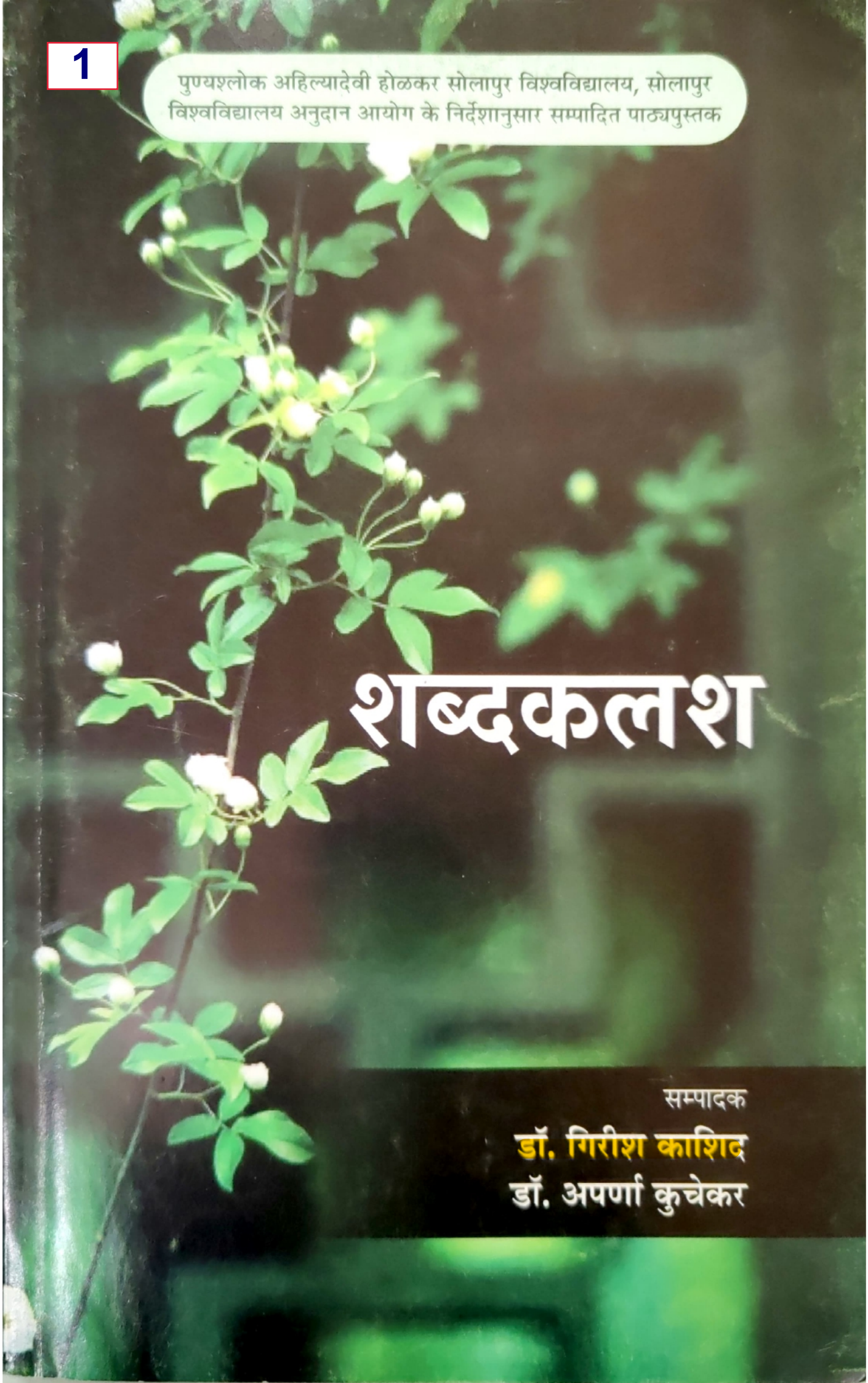

शब्दकलश

सम्पादक

डॉ. गिरीश काशिद

डॉ. अपर्णा कुचेकर

शब्दकलश

[पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार सम्पादित पाठ्यपुस्तक]

सम्पादक

डॉ. गिरीश काशिद

डॉ. अपर्णा कुचेकर

सम्पादन सहयोग

डॉ. सतीश घोरपडे

डॉ. नवनाथ शिंदे

डॉ. सुचिता गायकवाड

डॉ. पंडित बन्ने

राधाकृष्ण प्रकाशन

ISBN : 978-93-91950-34-7

शब्दकलश

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण : 2022

मूल्य : ₹175

प्रकाशक

राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110 051
शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017
वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com
ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

मुद्रक

बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

SHABDKALASH
Edited by Dr. Girish Kashid and Dr. Aparna Kuchekar

आवरण परिकल्पना : राधाकृष्ण स्टूडियो

राधाकृष्ण प्रकाशन

गद्य-पद्य संकलन

₹175

9 789391 950347

www.radhakrishnaprakashan.com

2

पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार सम्पादित पाठ्यपुस्तक

साहित्य सुमन

सम्पादक
डॉ. गिरीश काशिद
डॉ. दादासाहेब खांडेकर

साहित्य सुमन

[पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार सम्पादित पाठ्यपुस्तक]

सम्पादक

डॉ. गिरीश काशिद

डॉ. दादासाहेब खांडेकर

सम्पादन सहयोग

डॉ. अनिल सालुंखे

डॉ. विनायक खरटमोल

राधाकृष्ण प्रकाशन

ISBN : 978-93-91950-63-7

साहित्य सुमन

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण : 2022

मूल्य : ₹150

प्रकाशक

राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110 051

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006

पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211 001

36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com

ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

मुद्रक

बी.के. ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

SAHITYE SUMAN

Edited by Dr. Girish Kashid and Dr. Dadasaheb Khandekar

आवरण परिकल्पना : राधाकृष्ण स्टूडियो

राधाकृष्ण प्रकाशन

गद्य-पद्य संकलन

₹150

9 789391 950637

www.radhakrishnaprakashan.com

3

अस्पृश्यता उन्मूलन और अस्पृश्य वर्ग की
उन्नति के लिए आजीवन संघर्ष करनेवाले महान
समाज-सुधारक की प्रेरक जीवनगाथा

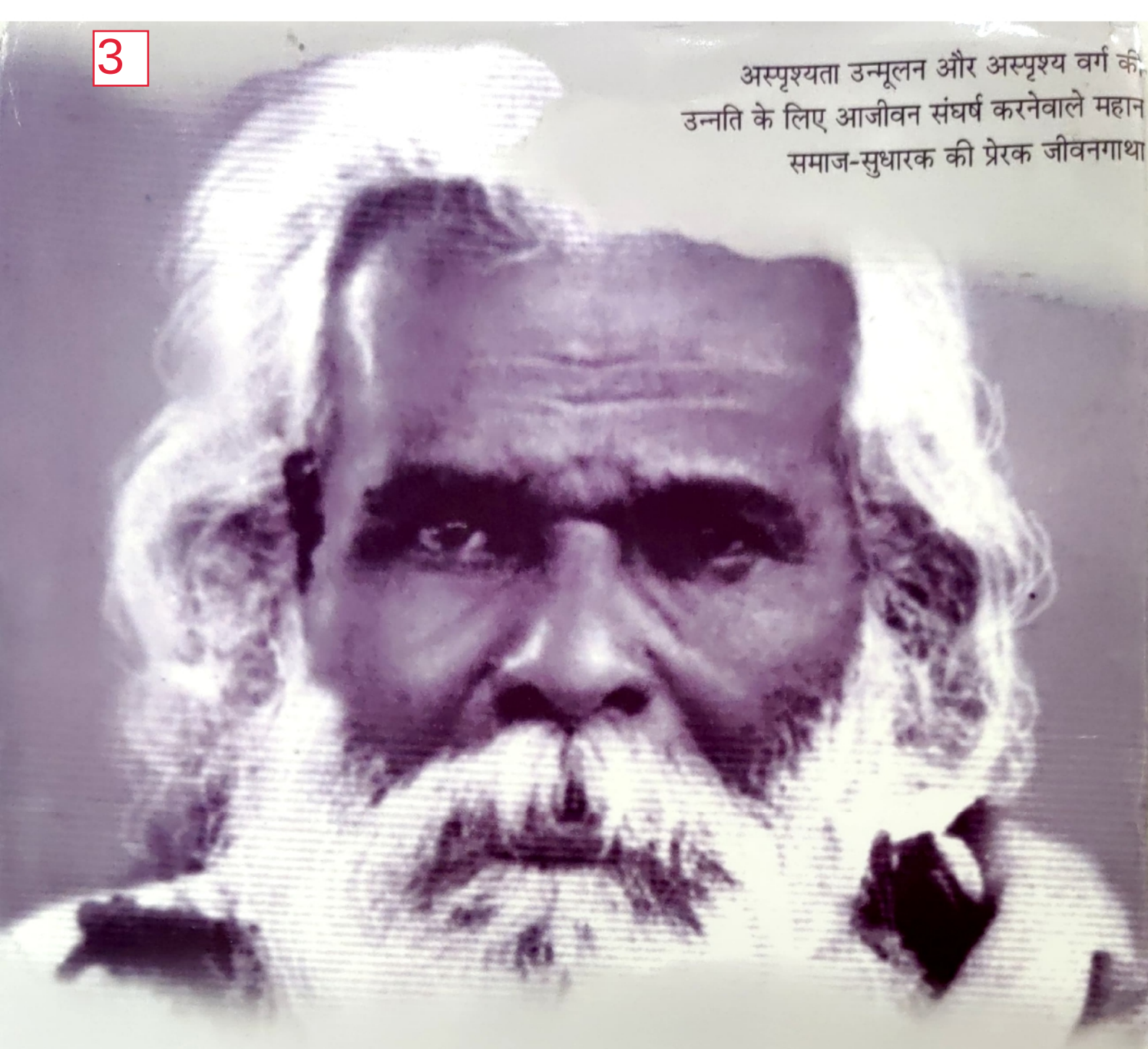

महर्षि विट्ठल रामजी शिंदे

जीवन और कार्य

गो. मा. पवार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कृति

अनुवाद

गिरीश काशिद

महर्षि विट्ठल रामजी शिंदे
जीवन और कार्य

गो. मा. पवार

अनुवाद

डॉ. गिरीश काशिद

राधाकृष्ण प्रकाशन

मूल मराठी ग्रंथ 'महर्षी विठ्ठल रामजी शिंदे : जीवन व कार्य' का हिन्दी अनुवाद।

ISBN : 978-93-91950-24-8

महर्षि विट्ठल रामजी शिंदे : जीवन और कार्य

© राहुल पवार

पहला संस्करण : 2022

मूल्य : ₹1695

प्रकाशक

राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110 051

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006

पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211 001

36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com

ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

मुद्रक

बी.के. ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

MAHARSHI VITTHAL RAMJI SHINDE : JEEVAN AUR KARYA

by G. M. Pawar

Translated by Dr. Girish Kashid

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकापी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन:प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

अपने स्वार्थ को त्याग कर, कन्धे में झोली लटकाकर अर्थात अपने जनों के लिए दर-दर जाकर भिक्षा माँगने वाले संस्था-संचालकों को चाहे जितनी थोड़ी सफलता मिले, उसकी परवाह किए बिना वे खुद चन्दन के समान छीजकर दूसरों को—हमें—सुख देने के लिए हमारी स्थिति में सुधार लाने के लिए अपने प्रयास जारी रखते हैं। ऐसे सन्तों का महत्त्व अब तक हुए किसी भी सन्त के मुकाबले हमें कम नहीं लगता। कइयों को तो वह अधिक ही प्रतीत होगा।

श्री गणेश आकाश जी गवई
डी.सी. मिशन के महाराष्ट्र परिषद् में दिया हुआ भाषण, पुणे, 1912

इतिहास यह बताता है कि राष्ट्र का विकास करनेवाले, सभी आन्दोलनों का उद्‌गम कुछ व्यक्तियों के कार्य में ही होता है। इस सन्दर्भ में वे व्यक्ति जिनकी प्रथमत: उपेक्षा की गई, वे 'डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन' के सज्जन थे। उनके कार्य से हिन्दू समाज की प्रचंड विवेक-बुद्धि जाग्रत हुई।

न्यायमूर्ति नारायणराव चन्दावरकर
डी.सी. मिशन की अस्पृश्यता निवारक परिषद्, मुम्बई, 1918

मराठों में मौजूद कार्य-शक्ति क्या कर सकती है, यदि कोई आपसे ऐसा प्रश्न पूछे तो उसे अन्नासाहेब शिंदे के कार्य के बारे में बताएँ। मराठों के स्वार्थ-त्याग का उदाहरण देने का प्रसंग आए तो आप अन्नासाहेब शिंदे का नाम लें। जिस तरह छत्रपति शिवाजी महाराज ने विदेशी सत्ता का विरोध किया; शाहू महाराज ने वर्ण-वर्चस्व का विध्वंस किया, उसी तरह उतने ही साहस से अन्नासाहेब ने अस्पृश्यता का विध्वंस करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

श्री बाबुराव जेधे
मुम्बई इलाका किसान परिषद्, पुणे, 1928

जनसेवा और सामाजिक उन्नति का ऐसा कोई आन्दोलन नहीं है, जिसको शिंदे को उल्लेखनीय योगदान नहीं मिला। राजनीति, समाज-कार्य, धर्म-कार्य और शिक्षा ही नहीं साहित्य-सृजन और ऐतिहासिक अनुसन्धान तक में शिंदे सक्रिय रहे। यह महत्त्वपूर्ण है जिस काल में विधवा-विवाह जैसे आम मसले का समाधान असम्भव था, धार्मिक पागलपन के उस भयावह दौर में अस्पृश्यता उन्मूलन का आन्दोलन स्थापित करना, उसके लिए 'डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन' संस्था स्थापित करना; इतना ही नहीं अस्पृश्यों के बीच जाकर उनसे तादात्म्य स्थापित कर उनके साथ रहना अतुलनीय साहस, मूलमार्गी बुद्धि और सम्यक सामाजिक संवेदना के बिना असम्भव था। इतनी व्यापक और सूक्ष्म दृष्टि वाले कार्यकर्ताओं की दृष्टि के दायरे में पूरा देश होना चाहिए, इसीलिए महर्षि शिंदे ने सामाजिक आन्दोलन की तरह ही कई राजनीतिक आन्दोलनों में भी हिस्सा लिया।

न्यायमूर्ति भवानीशंकर नियोगी
महाराष्ट्र साहित्य सम्मेलन, नागपुर, 1933

राधाकृष्ण प्रकाशन
E-BOOK उपलब्ध
आवरण परिकल्पना : राधाकृष्ण स्टूडियो
जीवनी | अनुवाद
₹1695
9 789391 950248
www.radhakrishnaprakashan.com

भारतीय साहित्याचे निर्माते

अमृतलाल नागर

श्रीलाल शुक्ल

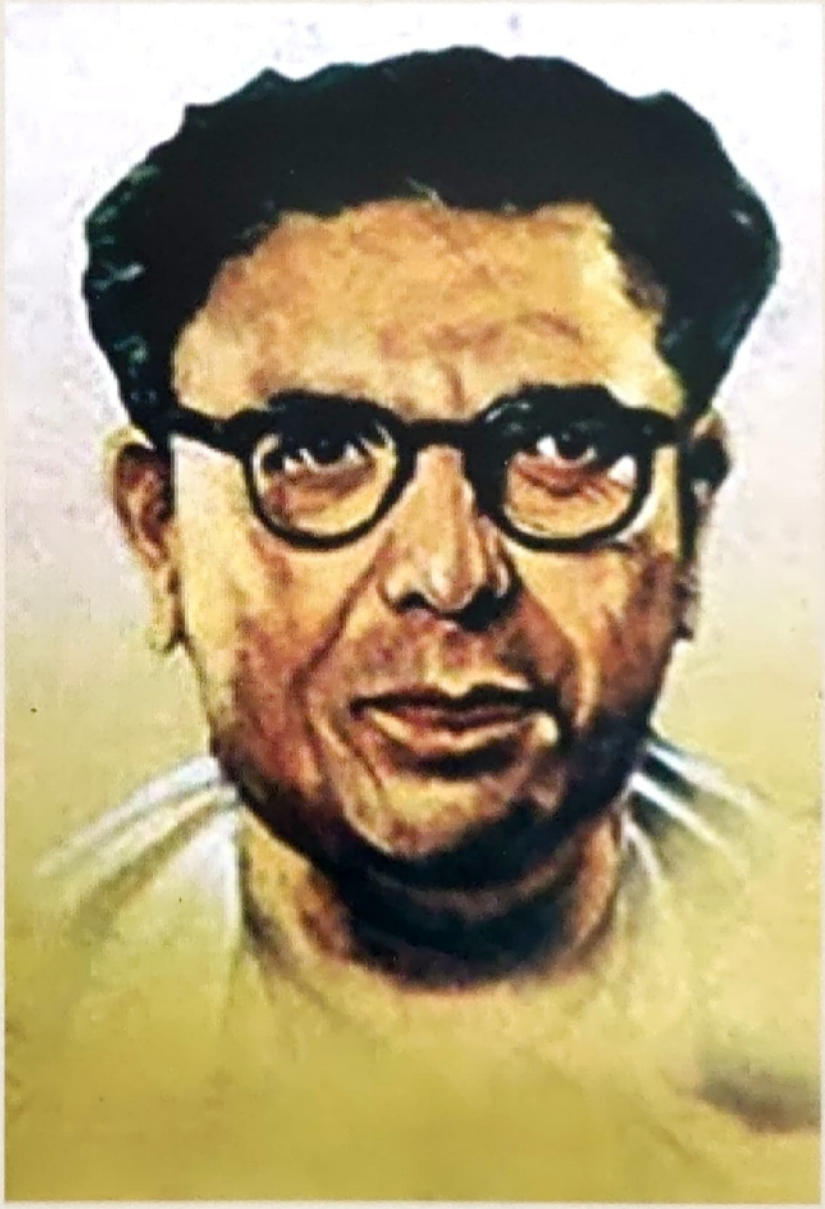

भारतीय साहित्याचे निर्माते

अमृतलाल नागर

श्रीलाल शुक्ल

अनुवाद

गिरीश काशिद

साहित्य अकादेमी

अमृतलाल नागर (1916-1990) यांची गणना आधुनिक भारतीय साहित्यातील श्रेष्ठ साहित्यिकांमध्ये होते. ते हिंदीतील एक महत्त्वाचे व लोकप्रिय साहित्यिक आहेत. त्यांची बहुमुखी प्रतिभा कथा, एकांकिका, नाटक, कादंबरी इत्यादींमधून व्यक्त झालेली आहे. ते हिंदी भाषेतील एक समर्थ कथाकार आहेत.

त्यांचे साहित्यविश्व अत्यंत व्यापक आहे. त्यांनी भारतीय इतिहासाच्या धूसर भूतकाळाशी निगडित 'एकदा नैमिषारण्ये' ही कादंबरी लिहिली आहे. महाकवी तुलसीदास आणि सूरदास यांच्यावरील कादंबऱ्यांमधून ते मध्यकाळातील वातावरण साकार करतात. शिवाय त्यांनी एकोणिसाव्या आणि विसाव्या शतकातील लखनऊच्या पार्श्वभूमीवर चार महाकाव्यात्मक कादंबऱ्या लिहिल्या आहेत. या कादंबऱ्यामधून भारतीय समाजाचे व्यापक पटावर दर्शन होते. यातून भारतीय समाजाच्या जटिल समस्या, आकांक्षा आणि विवशता यांचा परिचय होतो. समाजातील वंचित आणि शोषित वर्ग व मध्यमवर्गाच्या मानसिकतेस ते साहित्याच्या माध्यमातून साकार करतात.

त्यांनी कथालेखनच्या वेगवेगळया पद्धतींचा उपयोग करून संरचनेशी संबंधित नवीन नवीन अविष्काररीती घडविल्या. प्रसिद्ध समीक्षक रामविलास शर्मा त्यांच्याविषयी म्हणतात, 'ते विसाव्या शतकातील एक महत्त्वाचे लेखक आहेत आणि त्यांनी हिंदी भाषेच्या प्रमाण आणि अप्रमाण दोन्ही शक्ती अभिव्यक्त केल्या आहेत.'

श्रीलाल शुक्ल (1925-2011) यांना अनेक वर्षे अमृतलाल नागर यांचा सहवास लाभला. तो अनुभव आणि स्वतंत्र अभ्यासाच्या माध्यमातून त्यांनी नागर यांचे जीवन आणि सृजन कार्य यांचे अत्यंत समतोल आणि संवेदनशील आकलन प्रस्तुत केले आहे. त्यांच्या 25 हून अधिक रचना प्रसिद्ध झालेल्या आहेत. ज्यामध्ये त्यांच्या 'राग दरबारी' कादंबरीस 1969 मध्ये साहित्य अकादेमी पुरस्काराने सन्मानित केलेले आहे. याशिवाय श्रीलाल शुक्ल यांना व्यास सन्मान (1999), पद्मभूषण (2005), ज्ञानपीठ पुरस्कार (2009) याबरोबर अनेक पुरस्कारांनी सन्मानित केलेले आहे.

गिरीश काशिद (जन्म 1973) हे हिंदी विषयाचे प्राध्यापक आहेत. त्यांनी समीक्षा, शोध व अनुवाद या क्षेत्रात लेखन केले आहे. त्यांनी मराठी भाषेतून हिंदीत बारा पुस्तकांचे भाषांतर केले आहे. 'कथाकार संजीव', 'नवम दशक के आंचलिक उपन्यास', 'हिंदी उपन्यासो में चित्रित आंचलिक जीवन', 'हिंदी महिला आत्मकथा' इत्यादी त्यांची शोध-समीक्षेची पुस्तके प्रसिध्द झालेली आहेत. त्यांच्या हिंदी भाषेतील लेखन व कार्यासाठी त्यांना 2014 मध्ये महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठाने 'हिंदी सेवी सम्मान' देऊन सन्मानित केले आहे.

Amritlal Nagar (Marathi)
Rs.50/-

ISBN 978-93-91017-89-7

9 789391 017897

साहित्य अकादेमी

Website : http://www.sahitya-akademi.gov.in

5

शकुंतिका

सृजन और दृष्टि

सम्पादक

डॉ. अनिल सिंह

शकुंतिका

सृजन और दृष्टि

सम्पादक

डॉ. अनिल सिंह

लोकभारती प्रकाशन

लोकभारती प्रकाशन
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग
प्रयागराज-211 001

वेबसाइट : www.lokbhartiprakashan.com
ईमेल : info@lokbhartiprakashan.com

शाखाएँ : 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने
पटना-800 006
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

पहला संस्करण : 2021 | **मूल्य :** ₹695

© लेखक/सम्पादक

बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032
द्वारा मुद्रित

SHAKUNTIKA : SRIJAN AUR DRISHTI
Edited by Dr. Anil Singh

ISBN : 978-81-948335-7-4

क्रम

भूमिका 11
पुरोवाक् 15
जीवन की पहचान 19

खंड-1

बदलते परिप्रेक्ष्य में परिवार और समाज

शकुंतिका : सामाजिक और पारिवारिक यथार्थ का दस्तावेज़ — *डॉ. मोहसिन ख़ान* 25
शकुंतिका : विश्वास की परम्परा का निर्माण — *डॉ. मनीष कुमार* 32
'शकुंतिका' उपन्यास में वर्णित समाज और समस्याएँ — *डॉ. अनिल सिंह* 36
नज़रिया बदलने की प्रेरणा देनेवाला उपन्यास : शकुंतिका — *डॉ. मधु खराटे* 43
सामाजिक आग्रह-दुराग्रह और शकुंतिका — *डॉ. पी. राधिका* 48
स्त्री जीवन का समसामयिक सन्दर्भ — *डॉ. उषा मिश्रा* 52
'शकुंतिका' उपन्यास में चरित्र-सृष्टि — *प्रा. अनन्त द्विवेदी* 59
समाज के बदलते सन्दर्भ और शकुंतिका — *डॉ. कुबेर कुमावत* 71
'शकुंतिका' उपन्यास में मानवीय रिश्तों और संवेदनाओं का अंकन — *सुशील कुमार 'आजाद'* 79
'शकुंतिका' उपन्यास में अभिव्यक्त सामाजिक समस्याएँ — *अर्चना यादव* 82

खंड-2

नारी अस्मिता, जीवन और मानव-मूल्य

बदलते मूल्यों के सन्दर्भ और शकुंतिका — *डॉ. कल्पना राजेन्द्र पाटील* 89
नारी अस्मिता की पहचान : 'शकुंतिका' — *डॉ. विजयश्री* 94
शकुंतिका : नारी के प्रति नया दृष्टिकोण — *डॉ. गिरीश काशिद* 99

स्त्रियों की चिन्ता को प्रतिबिम्बित करता उपन्यास : शकुंतिका
डॉ. प्रवीण चन्द्र बिष्ट 107

ऊर्ध्वगामी चिन्तन की ओर उद्‌बुद्ध करती 'शकुंतिका'
डॉ. सत्यवती चौबे 115

शकुंतिका : जीवन मूल्यों का यथार्थ अंकन
डॉ. अशोक आनन्दराव साळुंखे 123

शकुंतिका और नारी अस्मिता *डॉ. यंतुदेव बुधु* 129
स्त्री सम्मान का आख्यान : शकुंतिका *शोभा बिष्ट* 131
'शकुंतिका' में जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण डॉ. संजय जायसवाल 137
सामाजिक जीवन मूल्य और शकुंतिका *प्रा. कुमारी पूनम चौहान* 142

खंड-3

संस्कृति, परम्परा और नारी-चेतना

'शकुंतिका' उपन्यास में नारी जागृति के विभिन्न आयाम
सुभाषिणी लता कुमार 149

शकुंतिका : परम्परा और नारी-चेतना का यथार्थ *डॉ. सतीश पांडेय* 155
शकुंतिका : समाज और संस्कृति का नव-उन्मेष
प्रोफेसर (डॉ.) विजय कुमार भारती 164

परम्परा और आधुनिकता की सहज गाथा : शकुंतिका
डॉ. अंशिता शुक्ला 172

शकुंतिका : संस्कृति का नया आख्यान *प्रो. डॉ. के. वनजा* 177
शृंखला की बेड़ियाँ तोड़ता उपन्यास : शकुंतिका
प्रोफेसर (डॉ.) संजय नवले 183

शकुंतिका का सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य डॉ. रूपा सिंह 187
शकुंतिका : परम्परा और आधुनिकता का द्वंद्व *डॉ. योजना कालिया* 192

खंड-4

पितृसत्ता, स्त्री और मुक्ति के प्रश्न

स्त्री की मुक्ति गाथा : शकुंतिका *डॉ. श्रीलता विष्णु* 207
शकुंतिका : कथा संरचना एवं उद्‌देश्य *डॉ. अशोक हे. फर्डे* 213
शकुंतिका : पितृसत्तात्मक समाज के बदलते सन्दर्भ *डॉ. अनीता* 219

शकुंतिका : नारी के प्रति नया दृष्टिकोण

डॉ. गिरीश काशिद
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्रीमान भाऊसाहेब झाड़बुके कॉलेज, बार्शी, सोलापुर, महाराष्ट्र

हिन्दी कथा साहित्य को जिन कथाकारों ने भारतीय लोकजीवन के बुनियादी सन्दर्भों को जोड़कर नये तथ्य उजागर करने का प्रयास किया उनमें कथाकार भगवानदास मोरवाल का नाम उल्लेखनीय हैं। 'काला पहाड़' उपन्यास के जरिये अपनी एक महत्त्वपूर्ण पहचान बनानेवाले भगवानदास मोरवाल निरन्तर अपने उपन्यासों के माध्यम से उपेक्षित और ज्वलन्त सन्दर्भों को उजागर करने की पहल करते आए हैं। उनके 'बाबल तेरा देस में', 'रेत', 'हलाला', 'सूर बंजारन' ये उपन्यास इसके प्रमाण हैं। इसी शृंखला में उनका 2020 में प्रकाशित ताजा उपन्यास है 'शकुंतिका'। यह उपन्यास भगवानदास मोरवाल के अन्य उपन्यासों की तुलना में कुछ अलग है। शकुंतिका एक लघु उपन्यास है जो भारतीय जनमानस में गहराई से पैठी नारी सम्बन्धी गलत मान्यताओं की धज्जियाँ उड़ाकर उसकी महत्ता को रेखांकित करता है। भगवानदास मोरवाल महाकाव्यात्मक उपन्यास रचनेवाले कथाकार हैं। उनके उपन्यासों में हाशिये के समाज के जीवन संघर्ष को वाणी मिली है। इस उपन्यास में वे हमारे समाज की एक ज्वलन्त समस्या को व्यापक धरातल पर प्रस्तुत करते हैं। सदियों से नारी जीवन के कई आयामों को साहित्य में प्रस्तुत किया गया है। पहले का समाज और लोग फिर भी संवेदनशील थे जो नारी के जन्म को तो मान्यता देते थे। नये विज्ञान से दीक्षित समाज ने तो विज्ञान के सहयोग से स्त्री भ्रूण को गर्भ में ही मार देना आरम्भ कर दिया। जिसका हृदय विदारक रूप सामने आने पर गर्भलिंग चिकित्सा पर कानूनन प्रतिबन्ध लगाया गया। अपने घर में बेटी का जन्म ही न हो ऐसी मानसिकता रखनेवाले हमारे समाज में कम लोग नहीं हैं। बेटी के जन्म पर खुशी होना तो दूर अपितु उसे एक बोझ या पराया धन मानकर ही उसकी ओर देखा जाता है। यह उपन्यास समाज की पुरानी और नई पीढ़ी को एक मंच पर लाकर इस सन्दर्भ का अन्वेषण करता है।

उपन्यास की कथा का आरम्भ एक पुनर्वासित कॉलोनी से होता है। उपन्यास की कथा के जरिये मध्यवर्गीय जीवनशैली और उसमें स्थित नारी जीवन के कई सन्दर्भ सामने आते हैं। उपन्यास में भगवती-दशरथ और दुर्गा-उग्रसेन के परिवार की कथा बुनी

प्रस्तुत उपन्यास पुरुषप्रधान व्यवस्था को कठघरे में खड़ा कर देता है। नारी की ओर देखने की दृष्टि पर प्रश्नचिह्न लगाता है। नारी पहले मनुष्य है अतः उसकी ओर भी मनुष्य के रूप में देखना अनिवार्य है। सदियों से हमारे समाज ने नारी के प्रति गलत रवैया रखकर उसके विकास को बाधित किया। वर्तमान में जो परिवर्तन हुआ उसके चलते स्त्री अपनी काबिलियत सिद्ध कर रही है। नारी के प्रति होनवाले परम्परागत दृष्टिकोण को त्यागकर, लड़का-लड़की भेद न करते हुए दोनों को समान अवसर देना नये युग की माँग है। नई सदी में तो हमें विज्ञान और मानवता इन दोनों में मेल करके हमारे बच्चों को संस्कारित करना होगा। हमारे घर में नारी केवल बहू के रूप में न आए तो बेटी के रूप में भी आनी चाहिए, ऐसी मानसिकता का निर्माण आवश्यक है। अन्ततः स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर ही स्वस्थ समाज का निर्माण करते हैं। इनका अनुपात बिगड़ जाए तो भयावह समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। प्रस्तुत उपन्यास भारतीय समाज में नारी के प्रति होनवाले परम्परागत दृष्टिकोण का विरोध कर एक नये दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है।

वीरशैव संप्रदाय आणि वारकरी संप्रदाय : एक तुलनात्मक अनुबंध

महात्मा बसवेश्वर

दगडाचा देव,देव नव्हे ;
मातीचा देव, देव नव्हे ;
वृक्ष देव, देव नव्हे ;
धातुचा देव, देव नव्हे ;
देव तुमच्या अंतर्यामी ;
आत्मदेव जाणणेची थोर ;
हे "कुडलसंगमेश्वर" !!!

डॉ. विशाल प्रकाश लिंगायत

वीरशैव संप्रदाय आणि वारकरी संप्रदाय: एक तुलनात्मक अनुबंध

डॉ. विशाल प्रकाश लिंगायत

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

वीरशैव संप्रदाय आणि वारकरी संप्रदाय: एक तुलनात्मक अनुबंध

© डॉ. विशाल प्रकाश लिंगायत

❖ **Publisher :**
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ **Printed by :**
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ **Page design & Cover :**
Shaikh Jahuroddin, Parli-V

❖ **Edition:** June 2021

ISBN 978-93-90618-80-4

❖ **Price : 299/ -**

All Rights Reserved, No part of this publication may be reproduced, or transmitted, in any form or by any means, electronic mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed. Conclusions reached and plagiarism, If any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them. What so ever.Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

वाङ्मय) खंड–२', नटराज प्रकाशन–नागपूर, प्र.आ., १९८२

मोहिते शिवाजीराव (संपा.),'वारकरी संप्रदाय आणि संत साहित्य', कर्मवीर प्रकाशन–पुणे, प्र.आ.,एप्रिल.२००८

मोळक शैलजा (संपा.), 'जगद्गुरु श्री संत तुकाराम महाराज–स्मारक ग्रंथ', जिजाई प्रकाशन–पुणे, प्र. आ., फेब्रु. २००९

लोखंडे शशिकांत, 'संत नामदेवांची भावकविता:एक अभ्यास',प्रज्ञाप्रबोध प्रकाशन–सांगली, प्र.आ.,जुलै. २००८

शाबादे रेवण, 'करुणाघन म. बसवेश्वर', सुविद्या प्रकाशन–सोलापूर, प्र.आ., नोव्हें. २००९

सरदार गं. बा., 'संत वाङ्मयाची सामाजिक फलश्रुती', लोंकवाङ्मयगश्ह–मुंबई, पा.आ., मे. २००४

स्वामी बसवराज (संपा.), 'समग्र क्रांतिप्रवर्तक: म. बसवेश्वर', अमृता प्रकाशन–लातूर, प्र.आ., जून.२००९

हुच्चप्पा ए.एच., 'वास्तव लिंगायत धर्म आणि अवास्तव समजूती', अनुवाद : बिराजदार स्वरुपाताई, सुविचार प्रकाशन–उस्तुरी, प्र.आ. सप्टें. २०११

❑❑❑

संत ज्ञानेश्वर

"दुरितांचे तिमिर जावो ;
विश्व स्वधर्मे सूर्य पाहो ;
जो – जे वांछिल, तो – ते लाहो ;
प्राणिजात" !!

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126
(Maharashtra) Mob.09850203295
E-mail: vidyawarta@gmail.com
www.vidyawarta.com

ISBN : 978-93-90618-80-4

हिंदी साहित्य का इतिहास

यू.जी.सी. पाठ्यक्रमानुसार

डॉ. संजय नाईनवाड

ISBN No 978-93-80913-56-8

पुस्तक : हिंदी साहित्य का इतिहास

लेखक : डॉ. संजय नाईनवाड

प्रकाशक : दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स

3 सी-210, आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर - 208 021

संस्करण, : प्रथम 2021

© : लेखक

मूल्य : ☒ 995.00

शब्द-सज्जा : वंशिका ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : वंशिका डिजिटल प्रिन्टर्स, कानपुर

Hindi Sahitya Ka Itihas
By. Dr. Sanjay Nainwad
Price: Nine Hundred Ninety Five Only.

हिंदी साहित्य का इतिहास

(यू. जी. सी. पाठ्यक्रमानुसार)

डॉ. संजय नाईनवाड

दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स
नौबस्ता, कानपुर – 208021

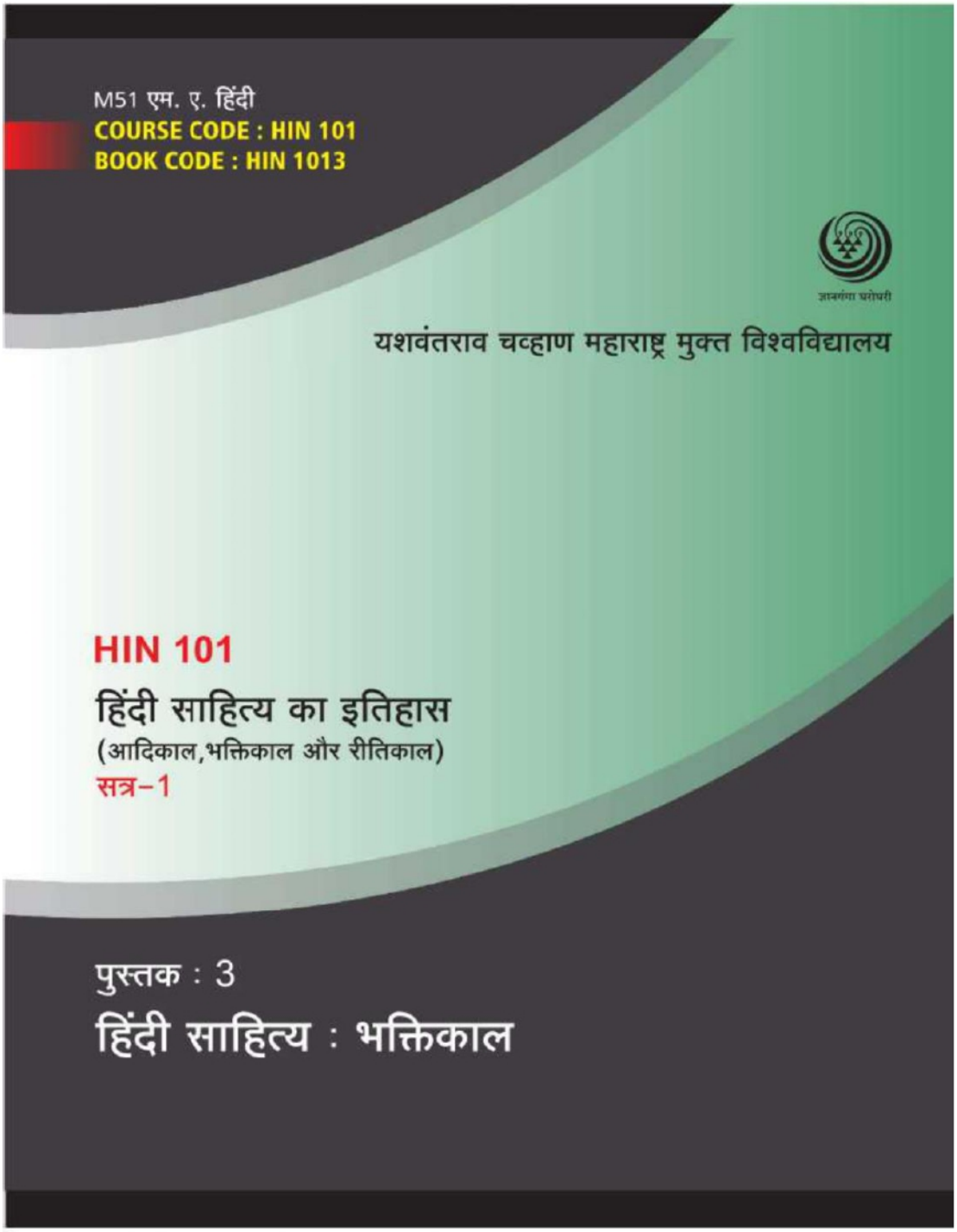
M51 एम. ए. हिंदी
COURSE CODE : HIN 101
BOOK CODE : HIN 1013
ज्ञानगंगा घरोघरी
यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय
HIN 101
हिंदी साहित्य का इतिहास
(आदिकाल,भक्तिकाल और रीतिकाल)
सत्र–1
पुस्तक : 3
हिंदी साहित्य : भक्तिकाल

ज्ञानगंगा घरोघरी
यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ

HIN - 101
हिंदी साहित्य का इतिहास
(आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल)
Book Code : HIN1013

पुस्तक 3

हिंदी साहित्य भक्तिकाल

लेखक : डॉ. वीणा दाढे, डॉ. संजय नाईनवाड

इकाई 1 : पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियाँ	1
इकाई 2 : कालविभाजन और नामकरण	20
इकाई 3 : भक्तिकाव्य परंपरा	28
इकाई 4 : निर्गुण भक्तिकाव्य	34
इकाई 5 : सगुण भक्तिकाव्य	46
इकाई 6 : प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रभाव	61

Course Code : HIN101 Book Code : HIN1013 हिंदी साहित्य भक्तिकाल

यशंवतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक

कुलपति : प्रा. ई. वायुनंदन

प्र. निदेशक : डॉ. प्रवीण घोडेस्वार, मानविकी एवं समाजविज्ञान संकाय

लेखक

डॉ. वीणा दाढे
85, राजीवनगर वर्धा रोड
सुमनवाडा, नागपूर - 440 025

डॉ. संजय नाईनवाड
हिंदी विभाग,
एस. बी. झाडबुके महाविद्यालय
बार्शी, जि. सोलापूर

संपादक

डॉ. सरजू प्रसाद मित्र
46, ललित्य पठान ले-आऊट,
रिंग रोड, नागपूर - 440 022

अनुदेशन - तंत्र एवं भाषा संपादक

चंद्रकांत तारु
मानविकी एवं समाजविज्ञान संकाय,
यचममुवि, नासिक - 422 222.

शिक्षाक्रम समन्वयक

चंद्रकांत तारु
मानविकी एवं समाजविज्ञान संकाय,
यचममुवि, नासिक - 422 222.

निर्मिती

श्री. आनंद यादव, प्रबंधक, ग्रंथ निर्मिती केंद्र, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक

2021, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक.
प्रथम संस्करण : ऑक्टोबर 2021 **प्रकाशन संख्या :** 2396
मुखपृष्ठ रूपरेखा : श्री. नितीन महामुनी
अक्षर संयोजन : परफेक्ट कॉम्प्युटर, त्रिमूर्ती चौक, सिडको, नाशिक - 8
मुद्रक तथा प्रकाशक : डॉ. दिनेश भोंडे, कुलसचिव, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक.
ISBN 978-93-91514-65-5

B21-22-101

Course Code : HIN101 Book Code : HIN1013 हिंदी साहित्य भक्तिकाल

यशंवतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय, नासिक

कुलपति : प्रा. ई. वायुनंदन

मानविकी एवं समाजविज्ञान संकाय परिषद

डॉ. प्रवीण घोडेस्वार
प्र. निदेशक
मानविकी एवं समाजविज्ञान संकाय
य.च.म.मु.वि., नाशिक

डॉ. विजया पाटील
सहयोगी प्राध्यापक
शिक्षणशास्त्र संकाय
य.च.म. मुक्त विद्यापीठ, नाशिक

डॉ. सतीश बडवे
मराठी भाषा एवं साहित्य विभाग
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा
विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

डॉ. मधुकर शेवाळे
उपग्रंथपाल
य.च.म. मुक्त विश्वविद्यालय
नाशिक

नागार्जुन वाडेकर
सहयोगी प्राध्यापक
मानविकी एवं समाजविज्ञान संकाय
य.च.म.मु.वि., नाशिक

माधव पळशीकर
सहयोगी प्राध्यापक
संगणकशास्त्र विद्याशाखा
य.च.म. मुक्त विद्यापीठ, नाशिक

डॉ. लतिका अजवानी
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय
य.च.म. मुक्त विद्यापीठ, नाशिक

प्रा. डॉ. विनायक देशपांडे
प्राध्यापक एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्ष
व्यवसाय प्रबंधन विभाग
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर
विश्वविद्यालय, अमरावती रोड,
नागपूर

डॉ. हेमंत राजगुरू
सहयोगी प्राध्यापक
शैक्षणिक सेवा विभाग
य.च.म. मुक्त विद्यापीठ, नाशिक

डॉ. मोहन काशीकर
प्रा. राजनीतिविज्ञान विभाग
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर
विश्वविद्यालय, अमरावती रोड,
नागपूर

डॉ. सुरेश कानडे
प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
एस.एम.आर.के. महिला महाविद्यालय
नाशिक

पाठ्यक्रम सलाहकार समिती (PAC)

डॉ. सुनिलकुमार लवटे
'निशांकुर', अयोध्या कॉलनी
राजीव गांधी रिंग रोड, सुर्वेनगर
कोल्हापूर

डॉ. सुधार शेंडगे
हिंदी विभागाध्यक्ष
डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर मराठवाडा
विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

डॉ. दामोदर खडसे
बी-503-504, हाई ब्लिस
कैलास जीवन के पास धायरी
पुणे

डॉ. तसनीम पटेल
हिंदी विभाग
पीपल्स महाविद्यालय
नांदेड

डॉ. सुर्यनारायण रणसुभे
'शब्दछाया' लक्ष्मी कॉलनी
लातूर

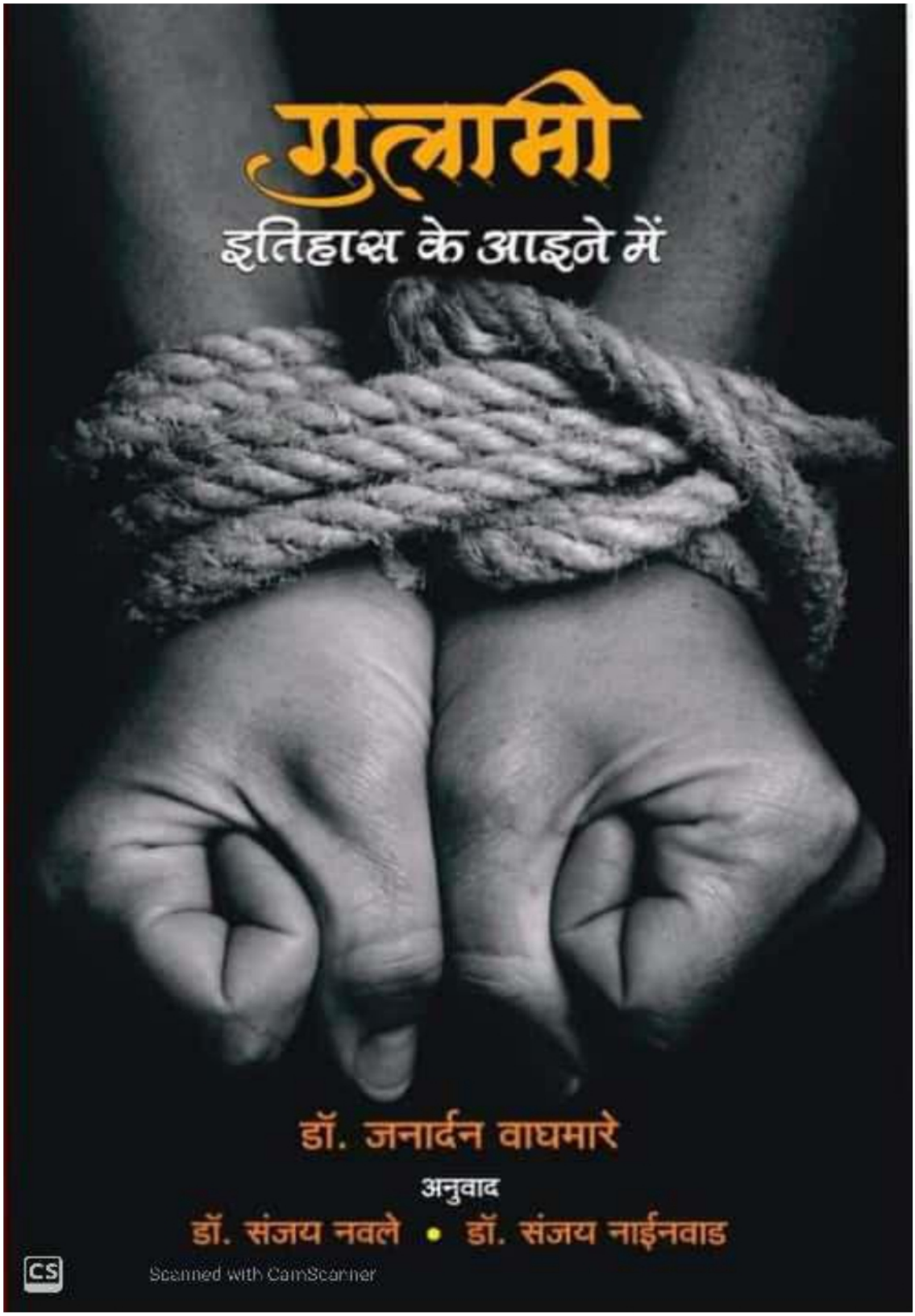
गुलामी
इतिहास के आइने में
डॉ. जनार्दन वाघमारे
अनुवाद
डॉ. संजय नवले • डॉ. संजय नाईनवाड
Scanned with CamScanner

ISBN : 978-93-91458-13-3

Copyright © Dr. Janardan Waghmare

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 295/-

शीर्षक

गुलामी : इतिहास के आइने में

लेखक

डॉ. जनार्दन वाघमारे

अनुवाद

डॉ. संजय नवले

डॉ. संजय नाईनवाड

प्रकाशक

आर.के. पब्लिकेशन

1/12, पारस दूबे सोसायटी,
ओवरी पाढ़ा, एस.वी.रोड,
दहिसर (पूर्व), मुम्बई - 400 068

Phone : 9022521190 / 9821251190

E-mail : publicationrk@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र

virar.mishra63@gmail.com

आवरण : अनिरूद्ध शर्मा

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

Gulami : Itihas Ke Aaine Men By Dr. Janardan Waghmare

Translated by Dr. Sanjay Navle & Dr. Sanjay Nainwad

गुलामी : इतिहास के आइने में

लेखक
डॉ. जनार्दन वाघमारे

अनुवाद
डॉ. संजय नवले
डॉ. संजय नाईनवाड

आर. के. पब्लिकेशन
मुम्बई

डॉ. जनार्दन वाघमारे

प्रो.डॉ.जनार्दन वाघमारे राज्यसभा सदस्य और राजर्षि शाहू महाविद्यालय, लातूर (महाराष्ट्र) के संस्थापक प्राचार्य रह चुके हैं। आपके नेतृत्व में इसी महाविद्यालय में एक नयी शिक्षा पद्धति निर्मित हुई, जिसे 'लातूर पैटर्न' नाम से जाना जाता है। आप स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड (महाराष्ट्र) के संस्थापक कुलपति भी रहे हैं। आप लातूर के लोक निर्वाचित नगराध्यक्ष भी रहे हैं।

बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी डॉ.वाघमारे शिक्षाविद, प्रखर चिंतक, समाज-सुधारक, कुशल राजनेता व प्रतिभाशाली लेखक हैं। आपके मराठी, हिंदी एवं अंग्रेजी में अब तक 60 ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। आपकी कई रचनाएं सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं।

आप मराठी के प्रसिद्ध समीक्षक हैं। दलित साहित्य आंदोलन, ग्रामीण साहित्य आंदोलन व जनवादी साहित्य जैसे आंदोलनों से जुड़े डॉ. वाघमारे विभिन्न साहित्य सम्मेलनों एवं गोष्ठियों के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आपने अमेरिकन ब्लैक लिटरेचर में पी-एच.डी. शोध कार्य किया है।

आपकी '**अमेरिकन नीग्रो : साहित्य आणि संस्कृती**' नामक मराठी पुस्तक दलित साहित्य आंदोलन की प्रेरक रही है। आपके साहित्य पर तीन शोधार्थियों ने एम.फिल. व पाँच शोधार्थियों ने पी-एच.डी. उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपने अमेरिका, इग्लैंड, कनाडा व श्रीलंका जैसे देशों के दौरे किए हैं। आपने 2009 में राष्ट्रसंघ की आमसभा में भारत का प्रतिनिधित्व भी किया है।

आर. के. पब्लिकेशन
मुम्बई

978-93-91456-13-3

₹ 295/-

Scanned with CamScanner

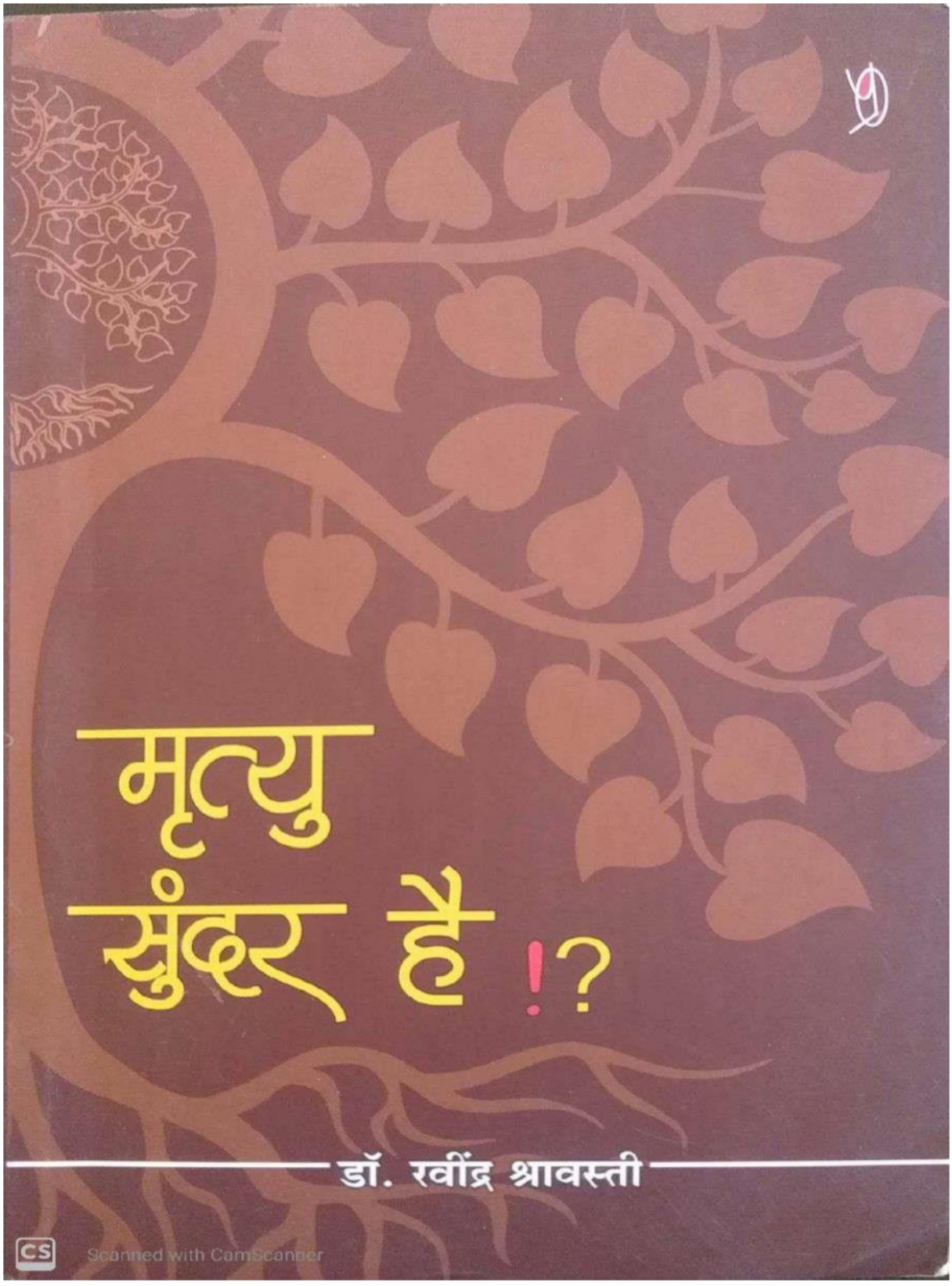
मृत्यु सुंदर है !?
डॉ. रवींद्र श्रावस्ती
Scanned with CamScanner

यहाँ प्रकाशित किसी भी सामग्री का किसी प्रकार और किसी भी रूप में उपयोग करने के लिए प्रकाशक और लेखक से लिखित अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य है।

प्रकाशक
प्रतिश्रुति प्रकाशन
7ए, बेंटिक स्ट्रीट
कोलकाता-700 001
दूरभाष : 9330010032
mail.prakashan@gmail.com

© डॉ. रवींद्र श्रावस्ती
प्रथम संस्करण : 2021

शब्दांकन, आवरण-आकल्पन
प्रतिश्रुति कला विभाग

मुद्रक
मंजरी इंटरप्राइजेज
62, हेमंत बसु सरणी, कोलकाता-700 001

मूल्य : ₹ 350.00

MRTYU SUNDAR HAI!?
by Dr. Ravindra Shrawasti
Trans. : Dr. Sanjay Nainwad

Printed in India

ISBN : 9789384012-27-4

Scanned with CamScanner

मृत्यु सुंदर है!?

डॉ. रवींद्र श्रावस्ती

मराठी से अनुवाद
डॉ. संजय नाईनवाड

प्रतिश्रुति प्रकाशन

Scanned with CamScanner

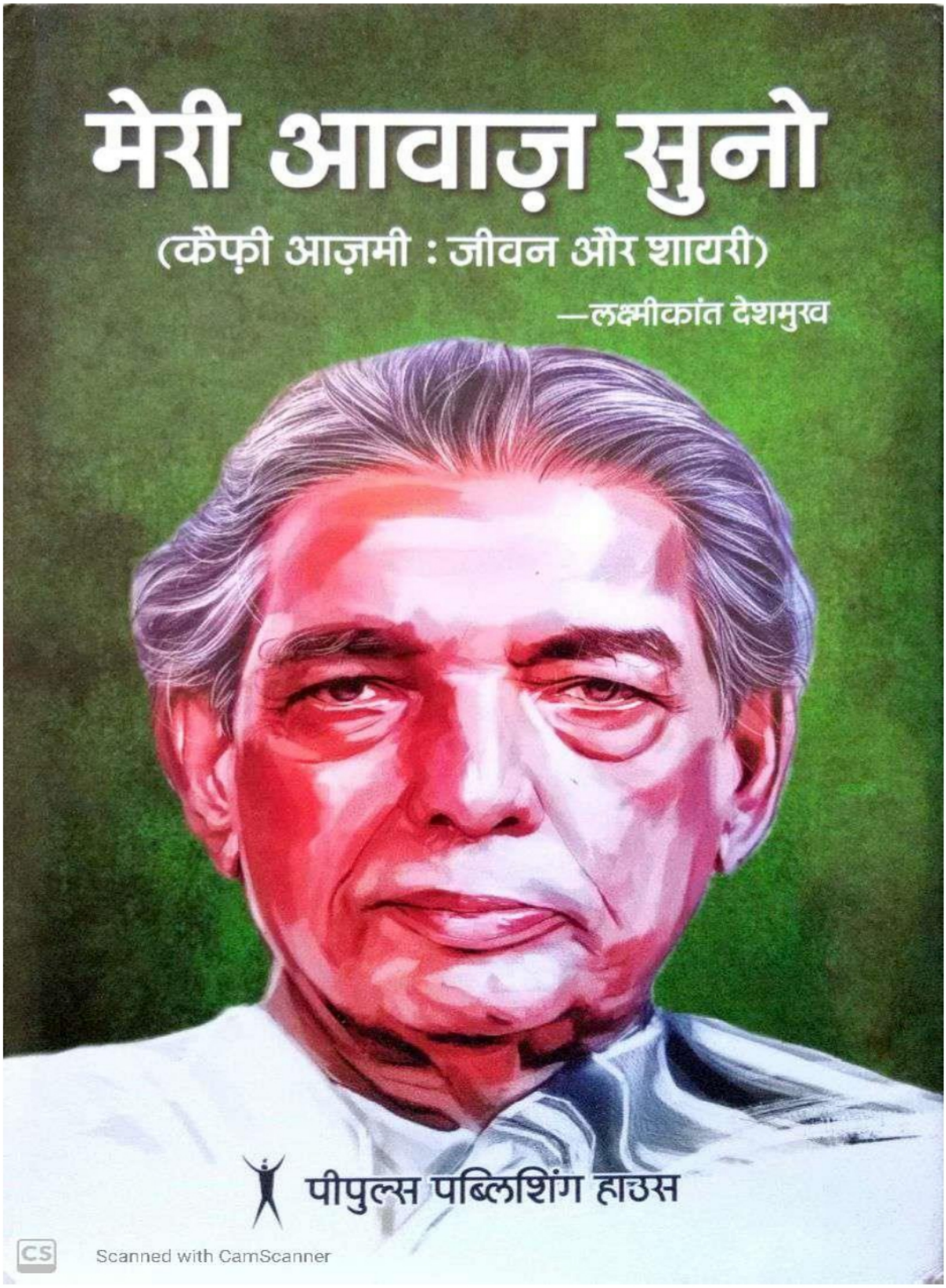
मेरी आवाज़ सुनो
(कैफ़ी आज़मी : जीवन और शायरी)
—लक्ष्मीकांत देशमुख
पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस
Scanned with CamScanner

प्रथम संस्करण : मार्च, 2021

© पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्राइवेट) लिमिटेड, नयी दिल्ली

ISBN : 978-81-7007-286-7

मूल्यः रुपये 600.00

डॉ. भालचन्द्र खांडेराव कांगो द्वारा यूनाईटेड मीडिया, बी-18, सोमदत्त चैम्बर-2, भीकाएजी कामा प्लेस, दिल्ली-66 में मुद्रित और उन्हीं के द्वारा पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड 5-ई, रानी झांसी मार्ग, नयी दिल्ली-55 की ओर से प्रकाशित।

Scanned with CamScanner

'मेरी आवाज़ सुनो!'

(कैफ़ी आज़मी : जीवन और शायरी)

लक्ष्मीकांत देशमुख

अनुवाद

डॉ. संजय नाईनवाड

अनुवाद संपादक

डॉ. गिरीश काशिद

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्राईवेट लिमिटेड
नयी दिल्ली 110 055

Scanned with CamScanner

Maharana Pratapsinh Shikshan Sanstha, Mumbai's

Anandibai Raorane Arts, Commerce & Science College, Vaibhavwadi

Tal. Vaibhavwadi. Dist. Sindhudurg, Pin- 416810 (Maharashtra)
NAAC Re-accredited (Third Cycle) 'A' Grade (CGPA 3.08)
ISO-9001: 2015 Certified
Affiliated to
University of Mumbai

Organized by
Department of Library and IQAC

One Day Online International Multidisciplinary Conference on

Research Methodology in Library Science, Social Sciences and Commerce

(Conference Date- 27 May 2021)

: Editor :
Prin. Dr. C. S. Kakade
Asst. Prof. Kishor M. Waghmare

: Co-Editor :
Asst. Prof. V. C. Kakade

Research Methodology in Library Science, Social Sciences and Commerce
Editor- Prin. Dr. C. S. Kakade, Shri. K. M. Waghmare

ISBN - 978-81-951586-8-3

Aruna Prakashan, Latur
103, Omkar Complex - A,
Ausa Road, Latur.

Copyright © Editor 2021

First Editon : 27 May 2021

Offset : Arty Offest, Latur

Front Page Design : Viru Gulve - 8600881127

Prize : Rs. 1050/-

Note : All rights reserved. No part of this publication may be reproduced,distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanicai methods, without the writter permission of the publisher and the Author.

INDEX

1. ONLINE LEARNING PEDAGOGY IN HIGHER EDUCATION IN LOCKDOWN PERIOD / 01
   Mr. Kishor M. Waghmare
2. LEGAL POLICY REGARDING ONLINE EDUCATION / 05
   Dr. Bhaumik P.Upadhyay
3. INDIAN HORITICULTURE DEVELOPMENT UNDER FIVE YEAR PLANS / 12
   Dr. K. Govindaraj
4. Technology Driven Education: A Review of the Digital Learning Initiatives in India / 19
   Ms Gayathri G
5. THE ELECTION AND ELECTROL REFORMS IN INDIA / 25
   Dr. DEEKSHITH KUMAR. M
6. IMPECT ON RECRUITMENT IN INDIA DURING COVID – 19 PANDEMIC : A CASE STUDY OF UNEMPLOYMENT / 30
   Dr. Sanjay B. Bagde
7. BUSINESS AND ECONOMIC RECESSION IN INDIA DURING THE COVID – 19 : A STUDY / 36
   Dr. Sanjay Dhanvijay
8. IMPECT OF COVID 19 ON INDUSTRIAL SECTORS : A STUDY / 43
   Dr. Vijay R. Bagde
9. Journey of Women from Ignorance to Feminists / 50
   Dr. Manjusha Y. Dhoble,
10. ICT and Its Impact on Library and Information Professionals / 54
    Dr. D. T. Satpute
11. The Psychic Depths, Estrangement and Social Alienation of Maya in Anita Desai's Novel Cry, the Peacock: An Exploration / 58
    Dr. V. Brinda Shree,
12. An Overview on Research Management Tool - Zotero / 63
    Mr. Gajbe Sumedh Shamrao
13. E-LEARNING IN SCHOOLS DURING CORONOVIRUS (COVID-19) PANDEMIC ON TAMILNADU: CHALLENGES AND OPPORTUNITES / 69
    Dr.Hameed Basha.B & Mr.H.Vignesh
14. Impact of covid-19 on Indian society / 75
    Dr.Shivaleela Basavaraj
15. IMPACTS OF COVID-19 ON SPORTS DURING PANDEMIC / 79
    Dr. Subhash S. Dadhe

106. Judicial Impact Assessment : Needed for Real Justice / 615
Dr. Suresh G Santani
107. Research on Packaging and Advertising of Creative Fast Moving Consumer Goods. / 622
Prof. Nitin A.Taware
108. Awareness and Use of NTR-MEDNET Digital Library Consortium E-Resources among the Post Graduate Students of Rajiv Gandhi Institute of Medical Sciences (RIMS), Kadapa, Andhra Pradesh / 631
Srinivas, Sonteni, Murali, Taddi
109. A STUDY ON THE COMPARISON OF ANXIETY BETWEEN CRICKET FAST AND SPIN BOWLERS AT THE INTERCOLLEGIATE LEVEL / 639
Dr. Manohar M. Mane:
110. ROLE OF DIGITAL LIBRARY PROJECTS AND E-RESOURCES FOR RESEARCH SINERIO / 644
Mr. Machindra K. Wakchaure
111. Role of Media in Pandemic Situation / 652
By Alpa Vyas
112. DIGITAL TRNSFORMATION OF LIFE IN PANDEMIC—ROLE OF INFORMATION TECHNOLOGY DURING COVID-19 / 657
Dr. Ruchy Sharma
113. OPEN ACCESS SYSTEM AND OPERATIVE CHANGES IN ACADEMIC LIBRARIES IN TAMILNADU / 668
Dr.R JAYAPRIYA
114. A descriptive study to assess the factor contributing to non compliance in DOTS regimen among adults affected with TB at Primary Health Centre, Madhurawada, Visakhapatnam / 674
Seema Kumari
115. STRATEGIES OF E-MARKETING IN LIBRARY INFORMATION PRODUCTS AND SERVICES / 679
Dr. Bhausaheb Bhimaji Shelke,
116. Stress Managements For Library Professionals / 683
Anil Ananadrao Jewalikar
117. A Study on Factor that Influencing Work Life Balance among Women in Banking Sector / 688
Dr. P. MURUGAN
118. Impact of Technology on Higher Education in India / 695
Dr. Divya Das S P
119. Voicing Feminism in Bama's Sangati / 699
Dr. Divya Das S P

Stress Managements For Library Professionals

Anil Ananadrao Jewalikar
Librarian
Shriman Bhausaheb Zadbuke Mahavidyalaya, Barshi

ABSTRACT

In today information age, the increasing scope of work, constantly flow of information, upsurge information needs of readers and other social and economical responsibilities have increased the stress in a library professional. Therefore it is necessary to manage stress to overcome it. In the end for healthy opmatspire in library ,the library professionals have to learn the technique to minimize stress while performing the job .Present paper focus on various types of stress, exactly stress means and how to using technique of stress management.

Key Words : Stress ,types of stress ,responsible elements of stress, technique of stress management library professionals

Exactly what is stress

A difficulty for the study of stress is that the term stress has a different meaning for researchers in various disciplines. In the biological literature, it is used in single organisms ,populations of organisms , and ecosystems . Biologists refer to such as heat, cold and inadequate food supply as being sources of stress. Stress is defined as a response to a demand that is placed upon you. stress is emotional and physical strain caused by our response to pressure from the outside world. In oxford dictionary the stress is define as a state of affair involving demand on physical or mental energy. According to English Language Learners define stress as a state of mental tension and worry caused problems in life ,work etc. Stress in a normal reaction when your brain recognise a threat. When the threat is the perceived, your body release that active your fight or flight response is not limited to perceiving a threat but in less server cases is triggered when we encounter unexpected events .ACS library best described stress as a condition or feeling that a person experience when they receive that the demand exceed the personal and social resources the individual is able to mobilize for most people stress is negative experience. Stress is a such situation in we can't stay for long time, we need to relief from it.

Facts about stress

1. A part of our daily lives
2. Everyone handle different some stress.
3. It is simulate us, to act, think, or react.
4. It is very simple or extreme
5. Helpful for order to force us to accomplish certain tasks

6. Very important is without stress our bodies wouldn't react at all even in times of extreme danger
7. Help us to solve challenges and problems.
8. How to handle stress depends on us

What are the signs of stress?

Signs of stress in tension irritability, blood pressure rise, heart rate rise, inability to concentrate feeling excessively tired trouble sleeping ,difficulty breathing and stomach upset sweating Palms tight muscles that may cause pain trembling.

Types of stress

In the present changing environment the various kinds of street found among the LIS professionals these are divided in the following types.

1. Job security stress: the changing platform of information communication Technologies has compelled the LIS professionals to acquire new skill, knowledge along with traditional library function and service In our country there is limited scope for them to undergo in service training programs , workshop ,higher studies ,refresher course and practice based courses etc, which has increased a considerable amount of stress among professionals further, with increasing intrusion and recruitment of IT professionals or computer science people into the LIS profession have created fear among LIS professionals about their job security in future
2. Physical stress: environment of digital library has changed the physical structure of the job environment due to this sitting in front of computers for long hour working in air-conditioned environment etc have resulted in the physical stress and illness. In this situation every professional fight with such a stress.
3 Techno stress: the reasons of major stress is the fast progress development and application of information, communication technologies in libraries. Continuous to rapid change in computer technology, , obsolescence of existing hardware &software is a common phenomenon in almost all library this leads to Techno stress for LIS professionals

ACUTE & CHRONIC STRESS:

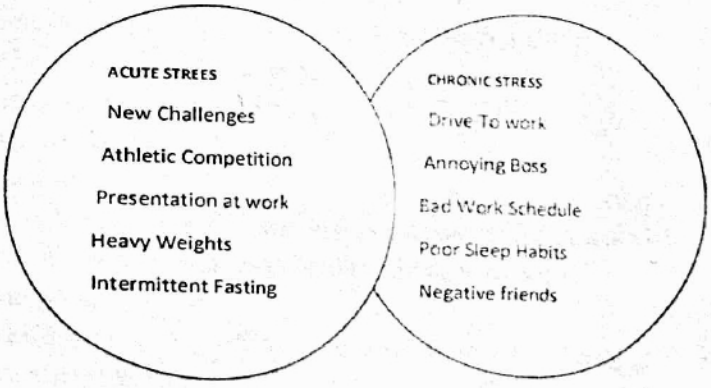

The Stress felt in libraries:

There are many reasons for creation of stress among LIS professionals. Stress can be derived from three such as physical mental and situational physical stress can be brought on by overwork lack of rest and poor diet mental stress can be tracked to a person mental state of mind which novels Expectations fears regrets etc situational stress is derived from the interaction with the outer world interaction with modern technologies role as a library manager etc

Now a days the digital Revolution and internet hit the library like a meteor during the past few years library like meaning other institutions have been experiencing change at accelerating rate the digital library environment has exhibited a drastic change in the function and service of libraries application of ICT in library tremendous changes in library environment now a day the Technologies such as we blogs, social bookmarking , Wikis, podcasts. RSS feeds. social software. ,various databases and online web service found useful to provide more efficient and pinpointed Library services to the users.

Though the implementation of about techniques in the library is a good sign but to cope up with that changing information requirements of users lead to stress among library employees

Elements responsible for stress In Library

A General Problems

1. Role ambiguity
2. Difference in working hours work load and responsibility
3. The ratio of changing the technology.
4. SET/NET Qualifying problems.
5 Pay scales problems
6 . Balancing API Score
7. Expansion the quantitative or qualitative nature of library work
8 . Information needs of Readers
9. Various problems of Library Staff
10. The lack of standardization.
11 . Enthusiastic about new technology.
12. The lack of training to individuals of the equipments.
13. Reliability of the technology.
14. The changing roles of librarian.
15. Lack of library staff. funds

Personal problems

1. Losing of confidence in doing job ,sometime policies of instauration
2. Lack of time for self development, personality development
3. Balancing job and home
4. Lack of time given himself.
5 Vacation and leaves problems.

There is various problems are responsible for stress .Another broad category of research in the library work place is interpersonal relationship with library are an obvious source of stress for public services staff members on the one hand there can be great intensity in a relationship between librarian and people day tried to help sometimes leading to feeling of frustration and help cannot be fully responsive to the patron's need.

Library staff members are also distressed at a lack of respect and recognition in their inter personal relationships lack of effective positive feedback from supervisor co-worker became causes what stress inter departmental conflict tension between professionals and non professionals competition for status and resources irritability and negative co-workers and gossips are also the cause of stress in their

Evaluation from supervisors is often seen and infrequent not timely based on inadequate data disk Milton as a cause for stress in the library A final category of search stress in library to be maintained might be called career stage or career concurrence entry mid career and approaching retirement are carecr stage that have particular trainers and potential burnout associated with them strategies

Coping strategies

Library and have the responsibility for staying abreast of new technological developments apart from that they are also responsible to eliminate some of the stress factors among the library professionals librarians must effectively motivate their employees.

1. Librarian and his team should gain the knowledge about how to operate the stress and coping strategies
2. Library administration should take care to give full clear timely instructions to the Employees about job activities there should be no place to uncertainty, ambiguity.
3. In workplace the workload should be judicious
4. Library staff member should be encouraged to take vacations
5. Interpersonal relations among libraries staff. and users should strengthen encourage
6. No. of complains should reduce.
7. Job evaluation of IT job in the library should be done through appropriate channels timely feedback off work is essential
8. Maximum feasible autonomy of work should be given to the library employees
9. Focus should also given on orientation programs training library with it to her and other techniques
10. Motivational techniques such awards reorganization and job enrichment should be utilised.

Apart from the above strategies few other tips are also beneficial to reduce the stress of LIS professional

1 Relaxing the mind and body
2 Awareness of emotion and physical reaction
3 Healthy relationship
4 Develop interest in work

5 Planning and time management

Better way to manage the stress

1 Exercise, meditation and Yoga
2 Avoid alcohol and other addiction
3 Handle sleeping hours
4 Healthy food in diet
5 learn to no

Conclusion

In a current situation library professionals are really stressed. In this information age there are various change in technique. knowledge, resources and technology .In short more development are in library environment .More development mean more work and more work bring lot of stress. but it is not possible to avoid these all sources of stress. There is no any method to manage the stress but library professionals have to learn the art of reducing stress and technique of stress management.

Reference

1. Bunge, Charles. stress in libarary workplaces. Library Trends vol 38.no1
2. Dutt,p.k ,stress management.mumbqi .Himqlqyqs Publishing House
3. Lemu A.A. ,Stress management by library and information science professionals in Nigerian University libraries vol 7 No2
4. RoutrayBijalaxmi and SatpathySunil Kumar, space management of library and information science professionals in digital environment retrieved from http://epeint. Rclis. Org/8152/ stress management. Pdf
5. Sahu Ashok Kumar (2008) information management in new Millennium New Delhi ESS ESS Publication

ISBN: 978-81-951982-8-3
COVID 19:
Impact and Response
Volume II
Editors:
Dr. Sangeeta Govindrao Avachar
Dr. Gollapalli Tejeswara Rao
Dr. Ujwala Wamanrao Fule
Dr. Narayan Dattatraya Totewad
Bhumi Publishing
Bhumi Publishing
First Edition: 2021

COVID 19: Impact and Response Volume II

(ISBN: 978-81-951982-8-3)

Editors

Dr. Sangeeta Govindrao Avachar

Vice Principal and Head,

Department of English

Late Sow Kamaltai Jamkar Mahila

Mahavidyalaya, Parbhani M.S., India

Dr. Gollapalli Tejeswara Rao

Department of Education,

Mizoram University

(Central University),

Aizawl, Mizoram

Dr. Ujwala Wamanrao Fule

Department of Zoology,

Hutatama Rashtriya Arts and Science

College, Ashti,

Dist. Wardha, M. S. India

Dr. Narayan Dattatraya Totewad

Department of Microbiology,

B. K. Birla College of Arts,

Science and Commerce (Autonomous),

Kalyan, Dist. Thane, M. S. India

Bhumi Publishing

2021

16	**COMPARISON OF AYURVEDA AND ALLOPATHY** C. Y. PATIL, Y. K. PATIL, S. B. SONAWALE, V. A. ADOLE AND T. A. RAJPUT	153 – 158
17	**EFFECT OF COVID-19 PANDEMIC ON** **DIETARY STATUS AMONG COLLEGE STUDENTS** S. M. PRASAD AND K. SUBA LATHA	159 – 170
18	**A SCENARIO ON NOVEL CORONA VIRUS** **DISEASE (COVID-19) PANDEMIC** ANUPAMA PRABHAKARRAO PATHAK, MUKUNDRAJ GOVINDRAO RATHOD, SUSHIL JAGAN GHONGADE AND POOJA GAJANAN KATEKAR	171 – 178
19	**AN ANALYSIS OF CORONA VIRUS SPREAD IN INDIA** **DURING THE YEAR 2020-2021** MANISH KUMAR AND SHIVANI RAO	179 – 187
20	**COVID 19 PANDEMIC: A CYCLONE IN THE** **FIELD OF EDUCATION** N. R. DOIPHODE	188 – 194
21	**कोरोना काल में शिक्षा व्यवस्था** विजय भास्कर लावणे	195 – 196
22	**वर्तमान परिवेश में शिक्षा का गिरता हुआ स्तर** शोभा उपाध्याय	197 – 198
23	**कोव्हिड १९चा मानवी जीवनावर होणाऱ्या परीणामाचेअध्ययन** विजया कन्नाके	199 – 205

COVID 19 PANDEMIC: A CYCLONE IN THE FIELD OF EDUCATION

N. R. Doiphode

Shriman Bhausaheb Zadbuke Mahavidyalaya,

Barshi, Dist – Solapur, M.S. India

Corresponding authors E-mail: namitaalagikar@gmail.com

Introduction:

Today the world is facing the novel Coronavirus "COVID-19" pandemic, to which countries all over the world are stepping up their response to control the spread of infection and to strengthen prevention.

Focus is on study of the spread pattern of the virus and placing the highest priority to preserving the lives and safety of citizens.The measures deployed (including curfews, limiting mobility, and the confinement of businesses those considered essential, and the closure of schools and universities) would have negative socio-economic consequences on population and their living conditions.

Besides the immediate and tragic impacts of the COVID-19 pandemic on health, the preventive behavioral responses by households and the government's transmission control policies are likely to affect livelihoods and welfare through multiple channels. First, the need to attend sick family members or to recover from the illness and the sharp decline in national economic activities will reduce households' labor earnings from wages and self-employment. Second, the economic slowdown will reduce domestic and international remittances, impacting households' non-labor income.

Third, disruption in domestic and international supply chains may increase prices, particularly for food, while reduced access to education, healthcare, transport and other services will also significantly impact the society.These deprivations include rising malnutrition, school dropouts, child and maternal mortality, and violations including child labor, gender-based violence and violence against children.

The covid -19 pandemic has created the largest disruption of education system in human history, affecting nearly 1.6 billion learners in more than 200 countries. Closures of schools, institutions have impacted more than 94% of the world student population. It has

5. Kuensel. (2020, March 6). First confirmed coronavirus case in Bhutan. Kuensel. https://kuenselonline.com/first-confirmed-coronavirus-case-in-bhutan/
6. Maurin, E., and McNally, S. (2008). Vive la révolution! Long-term educational returns of 1968 to the angry students. Journal of Labor Economics, 26(1). https://doi.org/10.1086/522071
7. Murgatrotd, S. (2020, March). COVID-19 and Online learning, Alberta, Canada. doi:10.13140/RG.2.2.31132.85120
8. Palden, T. (2020, August 12). Women test COVID-19 positive after five tests locking down entire country. Kuensel, pp. 1–2.
9. Petrie, C. (2020). Spotlight: Quality education for all during COVID-19 crisis (hundrED Research Report #01). United Nations. https://hundred.org/en/collections/qualityeducation-for-all-during-coronavirus
10. Ravichandran, P., and Shah, A. K. (2020, July). Shadow pandemic: Domestic violence and child abuse during the COVID-19 lockdown in India. International Journal of Research in Medical Sciences, 08(08), 3118. https://doi.org/10.18203/2320-6012.ijrms20203477
11. Sintema, E. J. (2020, April 7). Effect of COVID-19 on the performance of grade 12 students: Implications for STEM education. EURASIA Journal of Mathematics, Science and Technology Education, 16(7). https://doi.org/10.29333/ejmste/7893
12. Subedi, S., Nayaju, S., Subedi, S., Shah, S. K., and Shah, J. M. (2020). Impact of e-learning during COVID-19 pandemic among nurshing students and teachers of Nepal. International Journal of Science and Healthcare Research, 5(3), 9.
13. United Nations. (2020). Policy brief: Education during COVID-19 and beyond. United Nations. https://www.un.org/development/desa/dspd/wp-content/uploads/sites/22/2020/08/sg_policy_brief_covid19_and_education_august_2020.pdf
14. UNICEF 30 Nov 2020 https://www.unicef.org/press-releases/two-thirds-worlds-schoolage-children-have-no-internet-access-home-new-unicef

COVID 19: Imapct and Response Volume II

ISBN: 978-81-951982-8-3

About Editors

Dr. Sangeeta Govindrao Avachar is working as Vice Principal and Head of the Department of English at Late Sow Kamaltai Jamkar Mahila Mahavidyalaya, Parbhani (MS). She is working at Jamkar Mahila Mahavidyalaya since last 20 years. Her educational qualifications are M. A., B Ed, M Phil, NET, Ph. D. Her research interests are the areas of Feminism, Ecofeminism, Ecocriticism and Environmentalism. She has published 37 Research Papers. Two Poetry Collections have been published including Marathi Poetry Collection "Shimplyatil Moti" and English Poetry Collection "Catharsis of a Caring Soul". 10 News Paper articles have been published till date. She is a blogger at www.awakeupcall.in and published 18 Blogs. Being a multilingual writer is one of the noteworthy achievements for her as one Hindi poetry collection is on the way of publication. Dr. Avachar presented 31 research papers in various International/National Events such as seminars and conferences. She representes herself as writer and presenter in various poetry concerts, literary meets and poetry recitation programs.

Dr. Gollapalli Tejeswara Rao is working as an Assistant Professor at Department of Education, Mizoram University (Central University), Aizawl, Mizoram. He has 15 years of teaching experience in various Teacher Education Institutions. He completed four post-graduation Degrees, i.e. M. A (Sociology), M. A (Education) From Andhra University, Visakhapatnam, Andhra Pradesh, M.A (English) from Acharya Nagarjuna University Guntur, Andhra Pradesh. M. Ed from Sri Venkateshwara University, Tirupati, Andhra Pradesh. He received Ph. D. from Andhra University, Visakhapatnam, Andhra Pradesh. He has published a number of research articles in reputed national and International journals. Dr. Rao have organized national seminar and participated number of national and international seminars, conferences. His special research area is Tribal Education and Stress management.

Dr. Ujwala Wamanrao Fule is currently working as Assistant Professor in Zoology at Hutatama Rashtriya Arts and Science College, Ashti, District. Wardha, Maharashtra. She has thirteen years of teaching. She has completed Ph. D. in 2015, from R. T. M. University, Nagpur, M.S. Dr. Ujwala Fule has published 45 research papers in various national and international reputed journals. She also published three books and three book chapters. She received two international awards namely Distinguished Fellow Award (FVMS) in 2015 and Distinguished Researcher award in 2017. She has successfully completed one research project on "Assessment of Physicochemical and Biological Characteristics of Simbhora Reservoir in Amravati District" funded by University Grants Commission, India. She is life member of two research associations.

Dr. Narayan Dattatraya Totewad is currently working as Assistant Professor in Microbiology at B. K. Birla College of Arts, Science & Commerce (Autonomous), Kalyan, Dist. Thane, Maharashtra. He has eight years of Teaching and 14 years of Research Experience. He completed Ph. D. in Biotechnology on topic "Probiotics as feed supplement for growth and development of potential aquatic organisms under the guidance of Dr. G. Gyananath in 2013, from SRTUM, Nanded, M.S. He also completed post-graduate diploma in Bio-nanotechnology (2020). He published 2 books, written 6 book chapters and 10 research papers in National and International Journals of well repute. He was honoured with Excellence and Innovation Award in Microbiology (2020) from Pearl Foundation. Two Australian Innovation Patents granted and five Indian Patents published in Indian Patent Journal, India. He selected as Mentor by CSIR-Summer Research Training Programme-2020 conducted by CSIR Jorhat, Assam, India and Guided 11 students across India. His area of research interest is Basic and Applied Microbiology, Bio-nanotechnology, Environmental Science, Food Microbiology and Biomedical Sciences.

Bhumi Publishing

ISBN 978-81-951982-8-3
9 788195 198283

APPLIED RESEARCH IN BOTANY VOLUME-1

Dr. Anil Laxman Bhalerao
[M.Sc. Ph.D.]

Dr. Rajesh Shrirangrao Gaikwad
[M.Sc. Ph.D.]

mp mahi Publication

ISBN: 978-93-90651-59-7

First Edition: 2021

This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior written consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying or recording) otherwise without the prior written permission of both the copyright owner and the above-mentioned publisher of this book.

PRICE ₹ 399/-

PUBLISHER
MAHI PUBLICATION

Office No.1, Krishnasagar Society, Nr. Shivsagar sharda Mandir Road, Ahmedabad-380007

mahibookpublication@gmail.com

+(91) 798 422 6340

www.mahipublication.com

Copyright © 2021\ MAHI PUBLICATION

INDEX

SR. NO.	TITLE OF THE RESEARCH PAPER	NAME OF AUTHOR	PAGE NO.
1	EFFICIENCY OF MYCORRHIZAE AND PGPF FOR GROWTH PERFORMANCE ON CHILI CV SITARA	**PROF. DR. UDHAV N. BHALE**	9
2	EFFECT OF MYCORRHIZA ON CHEMICAL COMPOSITION OF THE *TAJETES ERECTA*. L AND *CATHARANTHUS ROSEUS*. L	**PRINCIPAL DR. RANGNATH AHER**	19
3	EXPLORATION OF EMERGENCY HERBAL FOOD RESOURCES OF TRIBAL PEOPLE FROM THE RAIGAD DISTRICT OF THE MAHARASHTRA STATE, INDIA.	**DR. KALPIT MHATRE AND PRINCIPAL DR. RAJENDRA SHINDE**	25
4	EFFECT OF GA+ IAA AND GA+ NAA PRE-TREATMENTS ON SEED GERMINABILITY AND ROOTING OF STEM CUTTINGS OF JATROPHA SPECIES.	**DR. RAJESH SHRIRANGRAO GAIKWAD**	29
5	GENETICALLY MODIFIED DISEASE RESISTANT FRENCH BEANS (*PHASEOLUS VULGARIS* L.) AS AN IMMUNE BOOSTER- A REVIEW	**SHREYA DOGRA & NARAYAN TOTEWAD**	37
6	EFFECT OF PEG-6000 INDUCED WATER STRESS ON PHYTOCHEMICALS IN WHEAT CULTIVARS (*TRITICUM AESTIVUM* L.).	**DR.DESHMUKH R.N. & SAWANT K.S.**	48
7	COMPARATIVE STUDY ON DIFFERENT CLEARING METHODS FOR THE PREPARATION OF LEAF VENATION OF LEAVES.	**SAIMA RASHID MIR, B.M. SHINDE AND M.M JANA**	55
8	ETHNOMEDICINAL PLANTS USED BY KOKNI TRIBAL OF NASIK AND DHULE DISTRICTS FOR TREATMENT OF PILES (MAHARASHTRA)	**SACHIN D. KUVAR AND DR. RAJENDRA D. SHINDE**	60
9	EFFECT OF MEDICINAL PLANTS ON PATHOGENIC FUNGI	**RAFI AHMED, SACHIN CHAVAN AND RUKHSAR BANO ANSARI**	66
10	ADDITION OF SACRED GROVE FROM RAIGAD DISTRICT FOR THE STATE OF MAHARASHTRA	**DR. KALPIT MHATRE**	75
11	EFFECT OF NITROGENOUS WASTE WATER OF BUFFALO STABLE ON GROWTH PARAMETERS OF SOME VEGETABLES IN MUMBAI	**NISHA SUTAR AND ANIL BHALERAO**	82
12	FLORISTIC DIVERSITY OF PLATEAUS IN DEVGAD, SINDHUDURG, MAHARASHTRA AND NEED FOR THEIR CONSERVATION	**DR. ALOK GUDE AND KALPIT MHATRE**	95

13	USE OF NATURAL FLORAL EXTRACTS AS PH INDICATORS	**ANKIT YADAV, NIKUNJ SULE AND PRATIKSHA KARADE**	97
14	FUNGAL CONTAMINATION OF PAPER CURRENCY POSSESSED BY DIFFERENT OCCUPATIONERS AND ITS CONTROL	**DR. RAJENDRA B. KAKDE**	103
15	EFFECT OF NITROGENOUS WASTE WATER OF BUFFALO STABLE ON NUTRIENTS OF SOME VEGETABLES	**NISHA SUTAR AND ANIL BHALERAO**	111
16	OCCURRENCE OF AM FUNGI IN *CASSIA TORA L.* PLANTS OF OSMANABAD DISTRICT	**PRAKASH SARWADE, SHAHAJI S. CHANDANSHIVE, VIKAS P.SARWADE' AND KAVITA N. GAISAMUDRE**	118
17	EFFECT OF COOKING AND STORAGE CONDITIONS ON THE NUTRITIVE VALUE OF *DOLICHOS* BEANS.	**SURVE SHIVANI A. AND BHAGAT SACHIN S.**	123
18	STUDY OF SEASONAL VARIATION IN LEAF CHLOROPHYLL CONTENT OF SOME TREE SPECIES OF HINGOLI REGION (M.S.)	**DR. KIRANKUMAR KHANDARE**	128
19	USE OF *POLYALTHIA LONGIFOLIA* AS BIOPESTICIDE: ADVANCEMENT TO TREAT FUNGAL DISEASE OF SOME MEDICINAL PLANTS	**DR. MANISHA S. SUTARE**	133
20	INVESTIGATION OF PHYSICO-CHEMICAL AND BIOACTIVE PROPERTIES OF HONEY FROM THE RAIGAD DISTRICT OF MAHARASHTRA STATE	**KALPIT MHATRE AND ALOK GUDE**	137
21	PROXIMATE ANALYSIS OF *PORTULACARIA AFRA*. JACQ.	**RUCHIRA JAVKAR AND ANIL AVHAD**	143
22	DIVERSITY OF MANGROVES AT JAITAPUR (RATNAGIRI DISTRICT), MAHARASHTRA STATE	**DR. KALPIT MHATRE, RAJENDRA SHEVDE AND MAHADEO BADGE**	149
23	PRODUCTION OF CYANOBACTERIAL BIOFERTILIZER AND ITS APPLICATION IN PADDY FIELDS.	**A. A. ATNOORKAR**	155
24	TRADITIONAL USES OF MEDICINAL PLANTS BY RURAL ZONE OF SAIKHEDA TAL-NIPHAD, DIST-NASHIK (MS)	**S.V. GOSAVI**	163
25	EFFECT OF STORAGE CONTAINER AND STORAGE PERIOD ON INCIDANCE OF FUNGI OF FOODGRAINS	**ANIL U. KULKARNI, AND ASHOK M. CHAVAN**	171
26	EFFECT OF MEDICINAL PLANTS LEAF EXTRACTS ON GROWTH AND SPORULATION OF FUNGI.	**ANIL N. KORPENWAR AND DEEPMALA A . GAIKWAD**	188
27	CURRENT STATUS OF RESEARCH ON MUSHROOM CULTIVATION IN INDIA	**YUVRAJ D. KENGAR ILAHI I. MUJAWAR AND NARAYAN D. TOTEWAD**	195

16. OCCURRENCE OF AM FUNGI IN *CASSIA TORA L.* PLANTS OF OSMANABAD DISTRICT

Prakash. P. Sarwade	S. G. R. G. Shinde. College Paranda, Dist-Osmanabad-413 503 (M.S.) India
Shahaji S. Chandanshive	S. G. R. G. Shinde. College Paranda, Dist-Osmanabad-413 503 (M.S.) India.
Vikas P. Sarwade	S. G. R. G. Shinde. College Paranda, Dist-Osmanabad-413 503 (M.S.) India.
Kavita N. Gaisamudre	Department of Botany, Shriman Bhausaheb Zadbuke Mahavidyalaya, Zadbuke Marg, Jamgaon Road, Barshi Tal. Barshi, Dist- Solapur 413 401. (M.S.), India

ABSTRACT

A survey of the arbuscular mycorrhizal (AM) status associated with Cassia tora L. plants growing and distributed in Osmanabad district of Marathwada region in Maharashtra state. The result showed that all the different sites Cassia tora L. plants had AM fungal association in the roots and spore population in the rhizosphere soil. However, maximum percent root colonization of AM fungi was observed in Paranda sites (98 %) followed by others, while minimum in Omerga sites (58 %).Paranda sites (300) showed more spore density whereas less in Kallam sites (59). Total five genera of AMF was identified up to species level in which Acaulosporaspp and Glomus spp were found dominate followed by, Sclerocystis spp, and Gigaspora spp were found poorely distributed.

KEYWORDS *Cassia tora L.*, Root colonization, AM fungi.

INTRODUCTION

More than 80% of all plants are associated with AMF in their root system (Smith and Read, 1997). These well-established AMF contribute to the phosphorus nutrition of plants by enhancing phosphorus uptake from the soil (Draft and Nicolson, 1966). *Cassia tora L.*is considered an annual weed, is very stress tolerant, and is easily grown. In India, it occurs as a wasteland rainy season weed and its usual flowering time is after the monsoon rains, during the period of October to February. Cassia tora grows in dry soil from sea level up to 1800 meters. The seed can remain viable for up to twenty years. Up to 1000 plants can emerge per square meter following rain. Once the seed has matured, it is gathered and dried in the sun. In South Asia, it usually dies off in the dry season of July-October the

successful establishment of plant species which can help to improve recovery rate of the soil system.

Cassia tora has many uses. The whole plant and roots, leaves, and seeds have been widely used in traditional Indian and South Asian medicine. The plant and seeds are edible. Young leaves can be cooked as a vegetable while the roasted seeds are used as a substitute coffee. In Sri Lanka, the flowers are added to food. It is used as a natural pesticide in organic farms, and as a powder commonly used in the pet food industry. It is mixed with guar gum for use in mining and other industrial applications. The seeds and leaves are used to treat skin disease and its seeds can be utilized as a laxative. Cassia tora is made into tea. In the Republic of Korea, it is believed to rejuvenate human vision. This tea has been referred to as “coffee-tea”, because of its taste and its coffee aroma. Since Cassia tora has an external germicide and antiparasitic character, it has been used for treating skin diseases such as leprosy, ringworm, itching and psoriasis and also for snakebites. Other medicinal provisions from plant parts include balm for arthritis using leaves of Cassia tora. Cassia tora is one of the recognized plants that contain the organic compound anthraquinone and is used in Chinese and Ayurvedic medicine. This herb is used in Ayurveda for treatment of swellings. Hence a study survey was conducted around Osmanabad district in Marathwada region, where the plant is grown throughout the year to observe AM fungal genera and species that are associated with plants.

MATERIALS AND METHODS

Rhizosphere soil androots samples of C. tora plants were collected from different locations of Osmanabad district (Viz. Kallam,Omerga, Paranda, Osmanabad, Tuljapur, and Bhoom)and in each plant three replications were taken. Root samples were brought to the laboratory which were then washed in tap water and cut in to 1 cm pieces in length. Root samples were cleared and stained using Phillips and Hayman (1970) [12] technique. Root colonization was measured according to the Giovannetti and Mosse (1980) [5] method. Hundred grams of rhizosphere soil samples were analyzed for their spore isolation by wet sieving and decanting method Gerdemann and Nicolson, (1963) [6].Identification of AM fungal genera up to species level by using the Manual for identification Schenck and Perez (1990) [15].

RESULTS AND DISCUSSION

The result shows that all the C. tora plants were colonized. Maximum percent of colonization were found in Paranda sites (98 %) than other five sites whereas, minimum percentage was found in Omerga sites (58%). Hyphal and vesicular types of colonization were found in roots of different C. tora plants. More numberof spores (300) was observed in rhizosphere soil of Paranda sites. Than Kallam,Omerga, Osmanabad, Tuljapur, and Bhoom sites. Total five genera were observed viz., Acaulospora spp Glomus spp, Sclerocystis spp, Entrophosphora spp and Gigaspora spp. Highest number of AMF genera and species was associated with Paranda sites while the lowest number of AM fungal genera and species were recorded in other five locations. Among AM fungal species Acaulospora spp and Glomus spp were found dominate followed by Sclerocystis spp, Entrophosphoraspp and Gigasporaspp were found poorely distributed. The data of percent of colonization and spore number associated with C. tora plants different Osmanabad sites are presented in table 1.

The occurrence of AMF in plants has reported earlier by Taber and Trappe (1982), Udea et al., (1992), Muthukumar and Udaiyan (2001), Selvaraj et al., (2001) and Rani and Bhaduria (2001). Recently, Bukhari et al., (2003), Muthukumar et al., (2006) and Swapna and Ammani (2009), reported the occurrence of AMF in different plants from India. The highest number of mycorrhizal spores in rhizosphere soil and AM fungal infection in the roots of C. tora indicated that these plant species might be considered good host for AMF under natural conditions. Therefore, here concluded that, occurrence or distribution of AMF varies with different Osmanabad sites associated with C. tora plants.

Table1. Percent root colonization and spore number in *Cassia tora L.* Plants.

Sr No.	Plant species	Colonization (%)	Types of colonization	*Spore population	AM fungal genera
1	Kallam	73	H	70	*Glomus* spp *Acaulospora* spp
2	Omerga	58	HV	201	*Glomus* spp *Acaulospora* spp *Gigaspora* spp
3	Paranda	98	HV	300	*Glomus* spp *Acaulospora* spp . *Sclerocystis* spp, *Entrophosphora* spp

4	Osmanabad	72	HV	175	*Glomus*spp *Entrophosphora* spp . *Acaulospora* spp
5	Tuljapur	60	H	202	*Glomus*spp *Acaulospora* spp
6	Bhoom	65	HV	160	*Glomus* spp *Acaulospora* spp

*Mean of three samples, H- Hyphae V- Vesicular

Acknowledgements

Authors are greatly thankful to Principal S. G. R. G. Shinde College Paranda, for their constant encouragement.

REFERENCES

1. **Bukhari, M.J., Khade,S.W., Jaiswal, V.J., Gaonkar, U.C. and Rodrigues, B.F.(2003).** Arbuscular mycorrhizal (AM) status of Tropical Medicinal plants: A field survey of Arbuscular mycorrhizal fungal association in Herbs. *Plant Archives*, 3 (2):167-174.
2. **Draft, M.J. and Nicolson, T.H. (1966).** The effect of endogone mycorrhizae on plantgrowth. *New Phytologist*, 65:343-350.
3. **Kulkarni Jayant and Prachi Mehta. (2013).** A Study of Status, Distribution andDynamics of Private and Community Forests in Sahyadri-Konkan Corridor of Maharashtra Western Ghats. Technical Report submitted to CEPF-ATREE. WildlifeResearch and Conservation Society, Pune.
4. **Muthukumar, T. and Udaiyan, K. (2001).** Vesicular arbuscular mycorrhizal association in medicinal plants of Maruthamalai Hills,Western Ghats,Southern India.*J.Mycol.Pl.Pathol.*31(2):180-184.
5. **Muthukumar,T.,Senthilkumar,M.,Rajangam,M.(2006).**Arbuscular mycorrhizal morphology and dark septate fungal associations in medicinal and aromatic plants of Western Ghats, Southern India. *Mycorrhiza*, 17:11-24.
6. **Malloch, D.W., Pirozynski, K.A. and Raven, P.H. (1980).** Ecological and evolutionary significance of mycorrhizal symbiosis in vesicular plants. *Proceedings of National science Academic*, 75:2113-2118.

7. **Dwivedi, O.P. and Vyas, D. (2002).** Effect of Potassium on the occurrence of AM fungi. *J. Basic and Appl. Mycol,* 1:233-235.
8. **Giovannetti, M. and Mosse, B. (1980).** An evaluation of techniques of measuring vesicular arbuscular mycorrhizal infection in roots. *New Phytol*.,84:489-500.
9. **Gerdemann, J.W. and Nicolson, T.H. (1963).** Spores of mycorrhizal *endogone* species extracted from soil by wet sieving and decanting. *Trans. Br. Mycol. Soc*., 46:235-244.
10. **Phillips, J.M. and Hayman, D.S. (1970**). Improved procedures for clearing root and staining parasitic and vesicular arbuscular mycorrhizal fungi for rapid assessment of infection. *Tans. Bri. Mycol. Soc*.,55(1),158-161.
11. **Rani, V. and Bhaduria, S. (2001).** Vesicular arbuscular mycorrhizal association with some medicinal plants growing on alkaline soil of Manipuri District, Uttar Pradesh. *Mycorrhiza News.,* 13(2): 12-14.
12. **Schenck, N. C. and Perez, Y. (1990).**Manual for the identification of vesicular arbuscular mycorrhizal fungi. *Synergistic Publications:Gainesville,FL.,U.S.A*., pp.1- 286.
13. **Smith, S.E. and Read, D.J. (1997).** Mycorrhizal symbiosis, 2nd Ed. Academic, San Diego, CA.
14. **Selvoraj, T.R., Murugan and Bhaskaran, C. (2001).** Arbuscular mycorrhizal association of kashini (*Cichorium intybus* L.) in relation to Physicochemical characters. *Mycorrhiza News.,* 13 (2):14-16.
15. **Taber,T.A. and Trappe, J.M. (1982).** Vesicular arbuscular mycorrhiza in rhizomes,scale like leaves, roots and xylem of ginger. *Mycologia*., 74:156-161.
16. **Udea,T.,Husope,T., Kubo,S. and Nakawashi, I.(1992).** Vesicular arbuscular mycorrhizal fungi (Glomales) in Japan II. A field survey of vesicular arbuscular mycorrhizal association with medicinal plants in Japan. *Trans. Br. Mycol. Soc*. 33:77-86.
17. **Swapna, V. L. and Ammani,K. (2009).** Association of AM fungi on medicinal plants at coal mines of Mancheriala, Andra Pradesh. *Mycorrhiza News*. 21(2): 5-6.

INTEGRATING COMMUNICATION THROUGH TECHNOLOGY

Editor
Dr. Sanjay Karande

INTEGRATING COMMUNICATION THROUGH TECHNOLOGY
Dr. Sanjay Karande

INDEX

No.	Name of Article	Writer	Page No.
16	Strengthening Communication Through Blended Grammar	Mr. Nagraj Dasmayya Kharade	78
17	Impact of Social Media on Society	Mr. Balasaheb Dhulaji Lande	82
18	The Communication Process	Mrs. Shinde Mohini Pandurang	88
19	ICT in Higher Education	Dr. Rahul N. Surve Dr. C.V. Tate	94
20	Ict In Higher Education Effect of NewTechnology Approach for Trainee Teacher in Higher Education	Prof. Smita S. Survase	106
21	Survey About The Use of Information Technology In Physical Education	Dr. Chandrasen Udhavrao Saruk	109
22	Title of the Paper:"Digital Media: A Study of Web Series Strategies adopted from Literature (Novels-Sacred Game and Leila)"	Dnyaneshwar Prakash Jadhawar	112
23	Research Topic Effective Communication and Its Barriers	Prin. Dr. Sharda N. Molawane Dr. Ransing Pratap Ramdas	121
24	E- Literature	Mr. Suhas Abhiman Shinde	126
25	How to Develop Listening Skill : A Brief Outlook	Dr.Vandana Sambhaji Kavitake	131
26	Presentation skills and Leadership	Tanaji Bharat Thorat	135
27	A Study Cyber Crimes and Cyber Laws In India	Mr. Shinde Ashok Krishna	140
28	Use of Information Technology in E- Governance	Smt. Jyoti Ramesh Yadav	152
29	Developing Active Listening Skill	Mr. Palke R.B.	158
30	A Study of communication process and the role of Technology	Dr Manoj B Gadekar	164
31	Consumer behaviour: Influence of Information on the decision-making process when choosing a tourist destination	Ms. Priya Ramesh Yeole	169

Scanned with CamScanner

30

A Study of communication process and the role of Technology

Dr Manoj B Gadekar

Introduction

Communication is highly important but intricate process. It is intricate at physical, mental and contextual level. The existence of living organism is based on the very basis of communication. It cannot be isolated from the context human society and surrounding. Communication in our day to day life is used interchangeably as language. However The concept of communication is broader and largely inclusive. The increasingly high level of inclusion of the modern communication technology has affected the entire process of communication. This discussion is centred around identifying the exact process, aspects and objectives of communication. These different aspects are useful to identify the picture and functioning of different aspects in communication. Every communication is well directed with certain objectives. The objectives is very from person situation to situation. The meaning is dependent on all these things. The following discussion is more elaborative topic specific. It includes the concept of communication, the classification of communication, the meaning of Technology, the role of Technology in communication, place of Technology in communication, different technological tools, the concept of leadership the nature of developing leadership through communication. This aspects are the part of this discussion.

Dr Manoj B Gadekar, Associate Professor and Head,
Shriman Bhausaheb Zadbuke Mahavidyalay, Barshi

Communication

The concept of communication is complex, multilayered, multifaceted, multidimensional, wide and deep. It also is purpose specific in which investigators uses of the term term according to their interest. Some of The definitions focus the medium, others highlight the channels, some highlight method, media, mode etc.

Process of communication

The process of communication involves three different things. These things include transmitter receiver and message. Original the idea comes in the mind of transmitter. The transmitter organises the idea systematically and medium is chosen; particular channel is selected; and then the message is sent to the receiver. The making of the message is not simple process, it includes encoding , the code may be verbal , nonverbal. After transmitting it in a particular medium and choosing a proper channel to send it to the receiver, the messages password to the receiver. Thing that the receiver does to receive the message decode it. as the messages is forwarded to the receiver, the receiver interprets, understands, as per the interest, context, mentality and other psychological sociological and physical variables. In between the process the actual meaning originated in the mind of the transmitter undergoes certain changes according to the receivers perception, and other internal and external barriers. Finally the message interpreted by the receiver becomes meaningful when the receiver sends feedback to the transmitter, finally the transmitter understands what you wanted to communicate or transmit and what actually is received by the receiver. This process of transmitting is a two way process which completes the process of communication. In this process of communication one more aspect of its entire process, and it is semantic gap or the gap in meaning. The process of communication progresses, the gap is narrowed down by both transmitter and receiver. Unless and until This process is understood, the communication cannot take place successfully. The following diagram is useful to understand the process operation, as well as it is helpful to understand various factors that contribute to the process of communication affecting it to be more effective and meaningful.

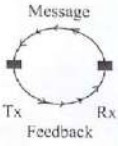

Scanned with CamScanner

This diagram shows that the conceptualisation of a particular idea or meaning forms in the mind of the transmitter first. The transmitter send it to the receiver through a proper channel by choosing an appropriate medium. It is in the form of message which is received by the receiver. In between the process of sending and receiving, there lies a gap this gap is called a communication gap. This Communication gap affects the entire process and to be more effective one has to reduce this gap with the essentials of communication; appropriate choice of medium; right choice of channel and communicating proper atmosphere. These things make communication effective.

Classification/ aspects of communication

The systematic study of communication includes identifying its meaning; nature; scope; functions and other peripheral things. The simplest way to have a better idea of the exact concept, it needs to be classified differently. The criteria for classification differ from person to person as well as the nature of their study and the interest of a particular branch of study. The communication can be classified on the basis of the nature of communication methods used in communication; medium used for communication; mode of communication; channels of communication elements etc. The following diagram is all inclusive creating more concrete environment for the discussion of the concept of communication. Because the rest of communication and discussion is dependent on this element. For convenience we can consider them the aspects of communication. As we go to the following diagram it becomes more particular and concrete. It shows the different dimensions of communication. It also shows that the classification is based on the aims and objectives of the users of the term. Every aspect is dealt in detail in the paragraphs.

The above diagram shows that there are different dimensions to communication. Communication can be objective specific; method specific; medium specific; mode specific; channel specific etc. Every concept used in the above diagram discussed below in brief.

Objectives

The objective of communication decides the medium, mode, channel and method. In general sense, the objective is the purpose of communication. At broader level, the communication has two

objectives: Information and persuasion. The information means to give and receive information from one person to another. In brief it is the process to send and receive information to appeal and individual intellectually. However Persuasion is the process in which one is intended to be appealed emotionally.

Methods

The methods of communication includes whether the flow process takes place with the help of words or sound; symbols; signs; body language and gestures. When the communication includes words and language, it becomes verbal communication and if it is without this aspects it becomes nonverbal communication. The choice of the methods depends on the nature of communication; relationship of the participants in the process of communication; the context in which the communication is used and other such elements.

Mode

The mode includes mail, courier, Telegraph, Telex etc. These are the conventional modes of communication. They have been used traditionally for a long time. However in the course of time, different modes of Communications have been used for communication. They are called as electronic modes of communication. Electronic modes of communication include telephone, cellular phones, fax, email, teleconferencing, internet and computers for communication. These modes of communications are frequented in day to day life. The present research paper is associated with the modes of communication.

Media

There are different media used for communication. They are known as mass media. This mass media are both printed as well as digital or electronic. The mass media include notice board, hoarding, newspapers, magazines, films, television.

Channels

The channels of communication consist of external channels and internal channels. The external channels are inward and outward and the internal channels are formal and informal. The formal channels are

Scanned with CamScanner

vertical, horizontal and consensus. The informal channel includes grapevine communication. Actually this classification is based on the relationship of the participants in the process of communication. Relationship decides the channel of communication and the channel decide the choice of the words and language as well as and the flow of information.

Technology: Its role

It has been a catchy phrase frequently used in the field of communication. Communication Technology is a sum of skills. techniques, tools, methods and processes used to make the communication effective, powerful, convenient, easy accessible . The equipments, peripherals, objects, elements etc produced by using the scientific knowledge is the technology. This technology has been playing hotel pivotal role in the field of communication. It has revolutionized the field and brought the world to call it a global village. The technology has its features speedy, accurate, time saving, easily accessible, energy saving, affordable and mechanical. This features I have changed the face of communication. It is used and formal and informal occasions; for face to face communication, written communication and all other formats of communication.

Technological tools

There have been used different technological tools to make the communication effective. They as mentioned earlier, have enhanced speed, accuracy accessibility etc. Among them, there are telephones, Cellular phones Fax Email, Internet computers, telegram social media etc. The flexibility ready accessibility, affordability time-saving nature have increased the nature and scope.

Conclusion

The above discussion shows that the used of technology is associated with the mode of communication. All other elements are as it is. They don't undergo any change. These modes of communication media of electronic communication make it more effective.

Work Cited

Rai, Urmila and S M Rai. Business Communinication. Himalaya, 2006

31

Consumer behaviour: Influence of Information on the decision-making process when choosing a tourist destination

Ms. Priya Ramesh Yeole

ABSTRACT

The purpose of the study was to identify the various sources of informationthat can influence tourists' decision making process.Information is interactive communication platform usually used for content sharing, interaction and collaboration among tourists. Prominent Information platforms are, websites, News Papers, Friends, Social Media, Tour Consultant, etc. These Information channels serve as spring of information and influence in decision-making process. Travel incident, photos, videos and other stuffingjoint on this may influence different prospective tourists in their destination selection decision. The influences of approximately the entire information sources diagonally a variety of sections are found to be considerably diverse.This study intended to discover the Influence of Information on tourists' decision making. The information plays an important role is finalizing the tourist destination irrespective of age, sex and race. The objectives and hypothesis are formed to prove the work of the authors. They have explained research methodology in detail as they are taken primary data by collection information by questionnaire and secondary data from secondary sources. The data collected from primary source is represented in tabular and graphical form and finally the paper with conclusion.

Ms. Priya Ramesh Yeole, (Assistant Professor in Department of Accountancy) PTVA's Sathaye College, Vile Parle (E), Mumbai

Scanned with CamScanner

ABOUT THE EDITOR

Working as an Assistant Professor and Head of the English Department at B. P. Sulakhe Commerce College, Barshi, Dist. Solapur (MS). His research papers have been published in many National and International journals. He has participated in various seminars, conferences and contributed his scholarly research papers. His areas of Interest are: Science Ficition, British Literature, ELT and Lingustics.

Dr. Sanjay B. Karande
M. A. B. Ed., Ph.D., SET

ISBN No.
9 789388 671194

GRATING COMMUNICATION THROUGH TECHNOLOGY

Dr. Sanjay Karande

16

महाराजा सयाजीराव हिंदी भाषण संग्रह

खंड 23

भाग 2

महाराजा सयाजीराव गायकवाड

का

भाषणसंग्रह

महाराजा सयाजीराव हिंदी भाषण संग्रह

खंड 23

महाराजा सयाजीराव गायकवाड का भाषण संग्रह

भाग 2

संपादक

डॉ. रमेश वरखेडे

हिंदी अनुवाद

डॉ. गिरीश काशिद

डॉ. धनंजय झालटे

प्रधान संपादक – डॉ. सुनीलकुमार लवटे

खंड संपादक – डॉ. विजय शिंदे

सत्यमेव जयते

उच्च शिक्षा विभाग

महाराष्ट्र शासन

2020

महाराजा सयाजीराव गायकवाड
भाषण संग्रह : भाग 2
संपादक
डॉ. रमेश वरखेडे
अनुवादक
डॉ. गिरीश काशिद
डॉ. धनंजय झालटे

प्रथम संस्करण : 2020
प्रतियों की संख्या : 5000

प्रकाशक :
सचिव,
महाराजा सयाजीराव गायकवाड
चरित्र साधन समिति, 115, म. गांधीनगर,
औरंगाबाद – 431 005.
sayajirao.govt@gmail.com

©
सचिव,
उच्च व तंत्र शिक्षा विभाग,
महाराष्ट्र शासन, मंत्रालय,
मुंबई – 400 032.

मुखपृष्ठ : राजेश दुबे / महेश मोधे

छपाई सहायता :
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिति और
पाठ्यक्रम अनुसंधान मंड़ल, पुणे 4.

मुद्रक :
प्रिंटवेल इंटरनेशनल प्रा.लि.
जी – 12, एम. आय. डी. सी.,
चिकलठाणा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र.

Books available at :

- The Directorate of Government Printing, Stationary and Publications, Maharashtra State, Netaji Subhash Road, **Mumbai** - 400 004.
  Phone - (022) 23632693, 23630695, 23631148, 23634049.
- **Pune** : Phone - (020) 26125808, 26124759, 26128920.
- **Nagpur** : Phone - (0712) 2562615, 2562815, 2564946.
- **Aurangabad** : Phone - (0240) 2331468, 2343396, 2344653.
- **Kolhapur** : Phone - (0231) 2650402, 2650395, 2658625.

Maharaja Sayajirao Gaekwad
Speechess : Vol. 2
Edited by
Dr. Ramesh Warkhede,

Translated into Hindi by
Dr. Girish Kashid,
Dr. Dhananjay Zalte

For Maharaja Sayajirao Gaekwad
Source Material Publication
Commitee, Higher Education,
Govt. of Maharashtra,
Mumbai - 32

प्रस्तुत प्रकाशन का हेतु महाराजा सयाजीराव गायकवाड और उनसे संबंधित विविध विषयों के लेखन को संयुक्त रूप से प्रकाशित करना है।

लोककल्याणकारी प्रज्ञावंत राजा के नाते महाराजा सयाजीराव गायकवाड जी की पहचान है। 1875 से 1939 तक चौंसठ वर्षों के लंबे कार्यकाल के दौरान उन्होंने बडोदा रियासत में आधुनिक प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में अनेक प्रयोग किए। महाराजा ने धार्मिक-सामाजिक सुधारों के कानून बनाकर समतामूलक समाज की मजबूत नींव बनाई। जातिभेद निर्मूलन के कानून बनाकर अस्पृशों के उद्धार के कामों को गति प्रदान की। सेंद्रिय खेती, ग्राम सुधार, औद्योगिकीकरण, व्यापार-उद्यमिता में बढोत्तरी, यातायात व्यवस्था का निर्माण, सार्वजनिक शिक्षा, प्रशिक्षित, कुशल और स्वास्थ्यसंपन्न मनुष्य शक्ति का निर्माण तथा नैतिक दृष्टि से पवित्र आचरण यह उनके शासन काल के प्रमुख मानदंड थे। प्रजातंत्र की प्रयोगशाला के नाते बडोदा राज्यशासन ने अपना आदर्श प्रस्थापित किया था।

महाराजा ने प्रत्येक मौके को लोकप्रबोधन और आधुनिक जीवनमूल्यों को प्रेरणा देने हेतु इस्तेमाल किया है। विद्यार्थी, किसान, महिला, साहित्यिक, कलाकार, राजसेवक, अनुसंधाता, धर्मसेवक आदि अनेक लोगों के साथ उन्होंने विविध भाषणों के साथ संवाद स्थापित किया है। शिकागो की धर्म परिषद, लंदन की मानव विद्या परिषद, जापान का सत्कार समारोह, रोटरी की आंतर्राष्ट्रीय परिषद, बनारस विश्वविद्यालय का उपाधि प्रदान समारोह, बुद्धिस्ट असोशिएशन, औद्योगिक परिषद, साहित्य संमेलन, संगीत परिषद, ग्रंथ संपादन मंडल, बाल संमेलन, भगवान बुद्ध और छत्रपति शिवाजी महाराजा की प्रतिमाओं का उद्घाटन, सामाजिक परिषदों आदि अनेक मंचों से विविध विषयों पर दिए गए व्याख्यानों को दो खंडों में संपादित किया गया है। इन सभी भाषणों को हमेशा चिंतन-मनन किया जाए ऐसे सार्वकालिक शाश्वत विचारों का खजाना है। संपूर्ण मानव जाति के कल्याण की सोच और संकल्प ही इन भाषणों का केंद्रिय विषयसूत्र है। आज-कल के राजनीतिक प्रशासक, उद्योगकर्मी, कृषितज्ञ, शिक्षासेवक और स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को इन दोनों खंडों के भाषण प्रेरणा स्रोत है।

महाराजा सयाजीराव गायकवाड चरित्र साधने प्रकाशन समिती
उच्च शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र शासन, मुंबई

मूल्य ₹ १२०/-

17

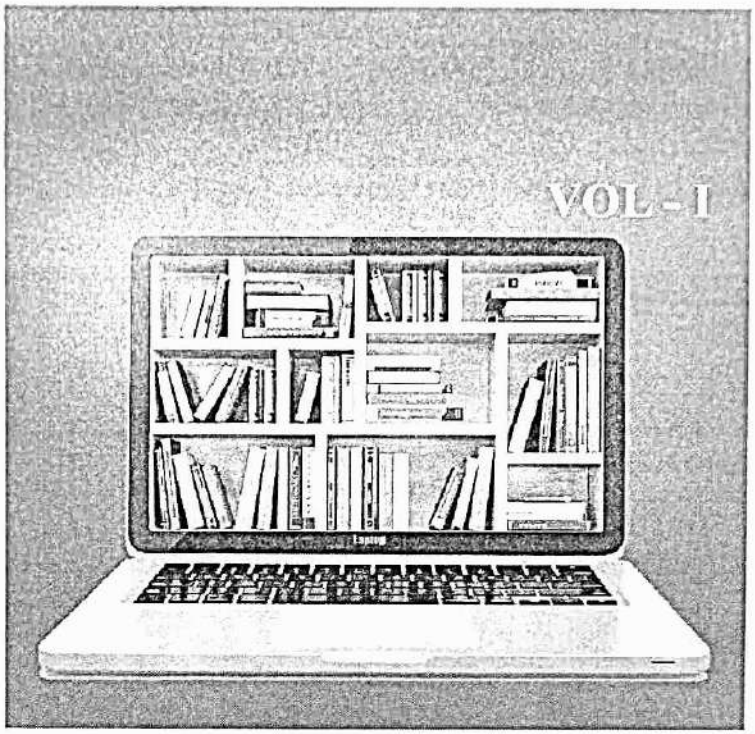

Reinventing Academic Libraries

Editors

Dr. Daya T.Patil (Dalve) | Dr. Veena Kamble (Salampure) | Dr. Dharmraj Veer

Dr. Shivshankar Ghumre | Dr. Hitendra Patil

REINVENTING ACADEMIC LIBRARIES
VOL - I

(I) Knowledge Management
(II) Development and Assesment of Digital Repositories Consortia

EDITORS

Dr.Daya T.Patil (Dalve)
Librarian
S.B.E.S. College of Science,
Aurangabad

Dr.Veena Kamble (Salampure)
Librarian
Vasantrao Naik Mahavidyalaya,
Aurangabad

Dr.Dharmraj Veer
Director
KRC, Dr.BAMU,
Aurangabad

Dr.Shivshankar Ghumre
I/c, Principal/ Librarian
Matsyodari Mahavidyalaya,
Ambad

Dr. Hitendra Patil
Librarian,
S.V.K.M.Institute of Pharmacy
Dhule

Atharva Publications

Atharva Publications

Reinventing Academic Libraries (VOL - I)
National Conference Papers
RALNESDACO 2020

Copyright © All rights reserved.

ISBN : 978-81-94486-66-4

Publisher & Printer
Mr. Yuvraj Mali

Atharva Publications
Dhule : 17, Devidas Colony,
Varkhedi Road, Dhule - 424001.
Contact : 9405206230

Jalgaon : Shop No. 2, 'Nakshatra' Apt., Housing Society,
Shahu Nagar, Opp. Teli Samaj Mangal Karyalaya,
Jalgaon - 425001.
Contact : 0257-2253666, 9764694797

Email : atharvapublications@gmail.com
Web : www.atharvapublications.com

In Association with
Maharashtra University and College Librarians Association

First Edition
7th February 2020

Type Setting
Atharva Publications

Price
Rs. 750/-

Disclaimer: *The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in the volume / book. The publishers or editors / Maharashtra University and College Librarians Association do not take responsibility for the same in any manner. Errors if any purely unintentional and readers are requested to communicate such error to the publishers or editors to avoid discrepancies in future.*

- ज्ञान व्यवस्थापन 159
  -प्रा. विलास गोपीनाथराव किर्दंत, प्रा. अनिल जेवळीकर
- महाविद्यालय ग्रंथालयातील वाचकांचा एक अभ्यास 161
  -ज्योती शा. मगर
- महाविद्यालयीन ग्रंथालयातील आवश्यक इंटरनेटशी संबधीत सेवा 169
  -डॉ. मुंढे संदिपान दत्तात्रय
- ज्ञान व्यवस्थापन 172
  -श्री. विनायक दशरथ नाकतोडे
- शैक्षणिक ग्रंथालयावर तंत्रज्ञानाचा प्रभाव 175
  -प्रा. अजित जनार्दन रंगदळ
- महाविद्यालयीन ग्रंथालय सेवांचे व्यवस्थापन 178
  -प्रा. संजय बी. इंहोळे
- ग्रंथालयीन सेवेत माहिती तंत्रज्ञानाचा प्रभाव 181
  -डॉ. तोटे दादासाहेब सर्जेराव
- ग्रंथालयीन सेवा व माहीती तंत्रज्ञान नवकल्पना 183
  -विजय आर. गायकवाड
- २१ व्या शतकातील ग्रंथालयीन सेवा 186
  -प्रीती गंगाधर पाटील, श्रीमती सुशमा गिरिश गोन्हे
- संशोधन आराखडा एक अभ्यास... 190
  -श्री. टी. एस. पाटील.

(II) Development and Assesment of Digital Repositories Consortia

- **Audit of Digital Library/Repository** 195
  - *R. G. Dharmapurikar*
- **Agricultural Repositories in India: With special Reference to ETD's on Krishikosh** 197
  - *Dr. Lathkar R. A, Dr Kulkarni, J. N.*
- **Use and Awareness of Plagiarism detection tools among Research** 203
  -*Dr. Santosh Kamble*
- **User satisfaction with Library Resources: Special Reference to KCES's Institute of Management & Research, Jalgaon** 208
  -*Dr. Chandrashekhar D. Wani, Dr.Vinay B. Patil*
- **E-content Management in Library and Knowledge Resource Centers** 212
  -*Mr. Hitesh Gopal Brijwasi Dr.,Tushar Patil,*
- **Library Consortia: An Overview** 215
  -*Mr Bhande Ankush Prabhu*
- **E- Services of Colleges Libraries at Beed district affiliated to Dr. Baba Saheb Ambedkar University: A Study** 218
  -*Dr. Manisha S.Sutar (Nawathe)*
- **Scientometric Profile of Library Networking in Scopus** 224
  -*Dr. Vikram U. Dahifale*

ज्ञान व्यवस्थापन

प्रा.विलास गोपीनाथराव किर्दंत
ग्रंथपाल, वसुंधरा महाविद्यालय, घाटनांदुर
ता.अंबाजोगाई जि.बीड

प्रा.अनिल जेवळीकर
ग्रंथपाल,
श्रीमान भाऊसाहेब झाडबुके महाविद्यालय, बार्शी

शोध संज्ञा : ज्ञान व्यवस्थापन, माहिती, माहिती प्रतिप्राप्ती.

ज्ञान व्यवस्थापन ही व्यापक संकल्पना आहे. व्यवस्थापन याचा मुख्य उद्देश म्हणजे आवश्यक असलेल्या घेणे. ज्ञान व्यवस्थापनात ज्ञानाचा योग्य प्रकारे शोध घेणे, त्याचा संचय करणे व हस्तांतरित करणे यामुळेच ज्ञान व्यवस्थापन ही संकल्पना वाढीस लागते. पुस्तकातून आपणास अनेक गोष्टी शक्य होतात त्यामध्ये नवीन ज्ञान प्राप्त होते तसेच त्यामध्ये निपुणता मिळते, त्यामुळे नवीन क्षमता निर्माण होतात, अनुभव मिळतो आणि या सर्व गोष्टीमुळे त्या संस्थेचा किंवा व्यक्तीचा कामाचा दर्जा वाढतो. ज्ञान व्यवस्थापनामुळे माहिती व ज्ञानाचे वितरण मोठ्या प्रमाणात होऊ शकते व दैनंदिन व्यवहारात ज्ञानाचा उपयोग करून घेता येतो.

ज्ञान व्यवस्थापन म्हणजे ज्ञान गोळा करणे, संघटित करणे, संचलित करणे आणि वितरित करण्याची प्रक्रिया होय.

सामान्यपणे ज्ञान व्यवस्थापन ही संकल्पना ग्रंथालयाच्या दृष्टीने महत्वाची आहे. ज्ञान व्यवस्थापन या बाबींमुळे ज्ञात माहिती म्हणजेच ज्ञान त्याची साठवण तसेच प्रक्रिया करून वितरण करण्यास मदत होते.

व्यक्त आणि अव्यक्त ज्ञान ओळखुन ज्ञानाची निर्मिती, जमवाजमव व वितरण होय. संस्थेतील प्रत्येकाचे ज्ञान संस्थात्मक पातळीवर आणून या ज्ञानाचा फायदा संस्थेतील सर्व विभागांना मिळवून देणे हे ज्ञान व्यवस्थापनाची महत्वाचे उद्दिष्ट आहे. संस्थेच्या इतर व्यक्तींशी ओळख होऊन संपर्क वाढून परस्पर भेटी, चर्चासत्रे, संमेलने, व्याख्यान, परिषदा अशा माध्यमाद्वारे एक व्यासपीठ प्राप्त होऊन ज्ञान व्यवस्थापन प्रक्रिया पूर्ण होईल.

ज्ञान व्यवस्थापनाचे उद्देश :

१. उपलब्ध ज्ञानाचा परिणाम कारक वापर करणे.
२. सहज उपलब्ध होऊ शकेल, ज्ञानाचे वितरण, प्रदर्शन, परिणाम कारकरीत्या करणे व त्याची सुरक्षितता राखणे.
३. संस्थेच्या ज्ञान देवघेवी मध्ये होणारे अडथळे दूर करून त्यातील सर्व विभागांना ज्ञान वितरित करणे.
४. संस्थांतर्गत व इतर संस्था या मध्ये ज्ञानसंप्रेषण.

ज्ञान व्यवस्थापनाची गरज व महत्व :

आज प्रत्येक व्यक्तीला, संस्थेला माहितीची गरज आवश्यक आहे. माहितीची गरज संस्थेतील व्यक्तींना यासाठी ज्ञान व्यवस्थापन ही बाब अत्यंत महत्वाचे आहे. प्रत्येक बाबतीत बदलते नियम बदलती क्षितीजे, तसेच नाविण्यपूर्णतेचा ध्यास यासाठी ही अतिशय मोठी गुरूकिल्ली आहे. त्याच बरोबर परिणामकारक ज्ञान व्यवस्थापन करण्यासाठी काही बाबी करणे आवश्यक आहेत त्यामध्ये

- कल्पना मुक्त स्तोत्र विस्तारित करून प्रत्येक क्षेत्रात नावीन्यपूर्णता आणणे.
- वेळ अधिक मर्यादित किंवा कमी करून वाचकांना सेवा कमीत कमी वेळेत देणे.
- उत्पादन आणि सेवा बाजारात आणून महसूल वाढवणे.
- कामगारांच्या ज्ञानाचे मूल्य जाणून घेण्यासाठी त्यांना पुरस्कृत करणे.
- कमीत कमी किंमत करून व्यवहार मर्यादित करणे.

ज्ञान व्यवस्थापनास महत्व येण्याच्या बाबी :

- वाढती स्पर्धात्मक बाजार पेठ.
- नाविन्यपुर्णतेची वाढ.
- ज्ञानाच्या कमतरतेमुळे कामगारांचे वाढते अस्थैर्य.

- कामगारांची संख्या व ज्ञान मिळवण्यासाठी अपुरा वेळ.

ग्रंथालय ज्ञान निर्मिती केंद्र :-

ग्रंथालयात असणारी ज्ञानाची भांडारे वाचकांच्या माहितीच्या गरजांची पूर्तता करू शकतील त्यासाठी ग्रंथपाल यांची भूमिका अत्यंत महत्वाची असते यामध्ये वाचकांच्या माहितीच्या गरजा ओळखणे यांचा अभ्यास करून त्या गरजा कशा पूर्ण होतील यासाठी प्रयत्न करणे गरजेचे आहे. ज्ञानाच्या हस्तांतर करण्याच्या प्रक्रियेत भूमिका अतिशय महत्वाची आहे. बौध्दिक आव्हाने पेलताना योग्य अशी दूरदृष्टी, सुविधा तयार करून जास्तीत जास्त माहिती प्रक्रियेत सहभागी होणे गरजेचे आहे.

माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर करून ग्रंथालय ज्ञान व्यवस्थापन करू शकतात. माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर केल्यामुळे ज्ञान संपादन करण्याची गती वाढते त्याचबरोबर त्याची किंमत अतिशय कमी होते तसेच न्याय मिळवण्याच्या टप्प्यातील वेळ कमी लागतो यासाठी इंटरनेट, मेटाडेटा, रिसोर्स शेअरिंग, ग्रुप वेअर, क्रेटा मायनिंग या सारख्या आधुनिक बाबी वापरणे गरजेचे आहे.

ग्रंथपाल एक ज्ञान व्यवस्थापक :-

ग्रंथालयात असणारे ज्ञानाची स्तोत्र हे अनेक संसाधनांमध्ये विखुरलेली असतात त्यांना योग्य प्रक्रिया करून जागेवर ठेवली जाते आणि जास्तीत जास्त वाचकांना ते वितरीत केले जाते. थोडक्यात असे म्हणता येईल ग्रंथपाल हा माहितीचा संकलक, वितरक आहे.

वाचकांच्या माहिती विषयक गरजा भागवणे हे ग्रंथालयाची मुख्य उद्दिष्ट आहे. यासाठी डेटाबेस मध्ये माहिती संचयित झालेली असेल ती मागणीनुसार पुरवणे त्यासाठी आवश्यक त्या ग्रंथालय सेवामध्ये बदल करून जास्तीत जास्त वाचकांना पुरवणे हे अतिशय महत्वाचे कार्य ग्रंथपाल करत असतो. आधुनिक युगामध्ये ग्रंथपाल ज्ञान व्यवस्थापन माहिती परीक्षक सुध्दा असते. ज्ञान व्यवस्थापनामध्ये ग्रंथपालाची भूमिका विज्ञान वितरकांची असते. योग्य ठिकाणी व योग्य वेळेत उपलब्ध करून देण्याची जबाबदारी ग्रंथपाल व्यवसायिकांनी आत्मसात केली पाहिजे त्यासाठी मराठी नवीन आधुनिक तंत्रे शिकली पाहिजेत. ज्याचा वापर वाचकांना परिणामकारक ज्ञान देण्यासाठी होणार आहे. ग्रंथपालाला ग्रंथालयशास्त्रात सोबत माहिती तंत्रज्ञान क्षेत्रातील नवनवीन बाबीवर प्रभुत्व मिळाले पाहिजे.

ज्ञान व्यवस्थापन ही संकल्पना कधीच न संपणारी आहे कारण ज्ञानाच्या गरजा सतत बदलणाऱ्या असतात. तसेच व्यावसायिक कामात ज्ञानाच्या गरजा सतत नव्या असतात. यासाठी ग्रंथपालानी ज्ञान व्यवस्थापनात आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करून सतत कार्यक्षम सेवा देण्यासाठी प्रयत्न करणे आवश्यक आहे. ग्रंथपाल हा ज्ञान व्यवस्थापक म्हणून अत्यंत महत्वाची भूमिका पार पडू शकतो. तंत्रज्ञानाचा वापर करून ग्रंथपालनी कार्य केले पाहिजे तरच वाचकांच्या ज्ञानाची भूक किंवा माहितीच्या गरज पूर्ण होण्यास मदत होईल. सध्याच्या आधुनिक युगात जग एका मोठ्या ज्ञानक्रांती कडे झेपावत आहे. त्यामुळे असलेल्या ज्ञानशक्तीचे योग्य व्यवस्थापन होणे आवश्यक आहे. यासाठी इतरांचा सहभाग, संशोधन करणे, यासारख्या बाबीचा विचार करणे आवश्यक आहे. तज्ञ आणि ज्ञानाधिष्ठीत प्रणाली, तंत्र व पध्दती यांचा विकास ज्ञान व्यवस्थापनातून होऊ शकतो. यासाठी ग्रंथपालांनी नव्या युगाची आव्हाने पेलून ज्ञान वितरक बनणे आवश्यक आहे.

संदर्भ ग्रंथसुची :

- गणपुले, श.रा., ग्रंथालय आणि माहिती केंद्राचे व्यवस्थापन. नाशिक : य.च.म.मु.वि.,२०००.
- गणपुले, श.रा. ग्रंथालय व्यवस्थापन. नाशिक : य.च.म.मु.वि.,१९९७.
- फडके, द.ना., ग्रंथालय संगणकीकरण आणि आधुनिकीकरण. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन, २००७.
- नरगुंदे, रेवती. प्रलेखन आणि माहितीशास्त्र. पुणे : युनिव्हर्सल प्रकाशन, २००७.
- घरखेडे, रमेश (संपा.), ज्ञानगंगोत्री : सु.अ.कुलकर्णी - मार्च एप्रिल २००५. नाशिक : य.च.म.मु.विद्यापीठ.

ABOUT THE EDITOR

Dr. Sanjay B. Karande
M. A. B. Ed., Ph.D., SET

Working as an Assistant Professor and Head of the English Department at B. P. Sulakhe Commerce College, Barshi Dist. Solapur (MS). His research papers have been published in many National and International journals. He has participated in various seminars, conferences and contributed his scholarly research papers. His areas of interest are: Science Fiction, British Literature, ELT and Lingustics.

ISBN No.
9 789388 671149

COMMUNICATION AND TECHNOLOGY FOR Trade, Commerce, Management, Leadership and Governance — Dr. Sanjay Karande

COMMUNICATION AND TECHNOLOGY

for

Trade, Commerce, Management, Leadership and Governance

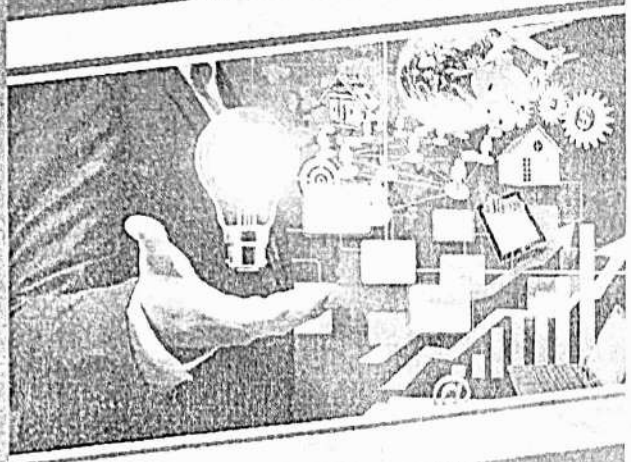

Editor
Dr. Sanjay Karande

Shri Shivaji Shikshan Prasarak Mandal Barshi's

B. P. SULAKHE COMMERCE COLLEGE, BARSHI.

Communication and Technology

for

Trade, Commerce, Management, Leadership and Governance

Proceedings of the

PUNYASHLOK AHILYADEVI HOLKAR SOLAPUR UNIVERSITY, SOLAPUR

sponsored

One Day Interdisciplinary National Seminar

on

Communication and Technology

for

Trade, Commerce, Management, Leadership and Governance

17th February 2020

Organised by

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

In Association with

SOLAPUR UNIVERSITY ENGLISH TEACHERS' ORGANISATION (SETO)

SKYLIGHT PUBLICATION PUNE- 48

Communication and Technology

for

Trade, Commerce, Management, Leadership and Governance

Dr. Sanjay Karande

Published by:
SKYLIGHT PUBLICATION,
Kondhava Khurd, Pune, 48.
9890916005

Copyright©
Shri Shivaji Shikshan Prasarak Mandal Barshi's
B. P. Sulakhe Commerce College, Barshi.
Tal- Barshi, Dist- Solapur (MS) 413411

Year of Publication: February, 2020

ISBN- 978-93-88671-14-9

All rights reserved

Printed and bound by:
Nalage Offset, Barshi.

Cover Design:
Rahul Bhalake, Barshi.

INDEX

No.	Name of Article	Writer	Page No.
1	Future of M-commerce services in India	Dr. Kale Urmila Namdev	1
2	E-Commerce : Benefits and Challenges	Dr. S.R. Shelke	6
3	Recent Trends in Bank Management	Dr. B. S. Salunkhe	12
4	Marketing in Library Services: A Comprehensive Study	Gaikwad Manisha K	16
5	Need of E-Resources in Academic Library	Mr. Tiparse M.D.	22
6	Study of Effectiveness of Trataka, Yoga on Performance of Junior College Archery Players in Solapur District	Vijayanand Shivlal Nimbalkar	27
7	Recent Trend in Corporate Social Responsibility in India	Prof. Kiran B. Chapte	32
8	Analysis of Different Methods /Forms of Farming: A Comparative Study	Mr. A. S. Patil	41
9	The Impact of Internet Banking on Society with Special Reference to Osmanabad District	Mr. More M.N	50
10	Management Information System versus Accounting Information System	Mr.Mahadev Ashok Dhage	59
11	The Concept of E-Resources And It's Use in the Library	Chavan M. N., Giri V. V.	69
12	Information and Communication Technologies (ICT) in physical education.	Prof. Hema S. Mande	77
13	A study of Effectiveness of 'Read to Me' software at Higher Primary Level	Satish Gajendra Shinde	81
14	Study of the Effectiveness of Social Media in Sports	Mr. Bitu Shivaji Molane Dr. Wangujare S. A.	85
15	Women Awareness On Information And Communication Technologies - A Study With Special Reference To Barshi Taluka	Sunilkumar Vishnurao Shinde	89
16	Human Resource Management	Mrs.Patil Vaijayanta Parmeshwar.	97
17	Study of E-Marketing practices in recent trends	Prof. Vijay Arvind Salunke	103

INDEX

No.	Name of Article	Writer	Page No.
18	E-library-Need for commerce management leadership and Governance Bpsceseminar2020@gmail.com	Kature Yogita M.	109
19	"A Role of Artificial Intelligence in Education"	Prof. Balasaheb V. Linge	114
20	The Role of E-Resources in Library	Mr. Anil Anandrao Jewalikar	122
21	Digital Data and Statistical Data Presentation	Miss. Chauhan Munika Bharatkumar	127
22	M-Commerce	Miss. Mandrupkar Rubina Mubarak	138
23	E-Resources a better option for Information	Mr. Kulkarni Rahul	143
24	E-Banking In India	Prof. Ganesh Bandu Vhale	147
25	Emerging Trends In Indian Agriculture With Technology	Smt. Warde K.S.	153
26	Sub Theme – Agriculture Economics Pomegranate Export Promotion Through Co-operative MAHAANAR	Dr. Andge Shashikant Chandrakant	158
27	A Methodology to Measure the Effectiveness of Academic Recruitment	Ranjeet D Ghavate Amol R. Khande Ganesh K. Savre	168
28	Study of the Problems While using Ict in Educational Research	Dr. Furde Raviraj	176
29	A Critical Study of Social Media in Marketing	Prof. Sunil S. Mane	179
30	"Analysis of 'Customer Satisfaction Management' of MSRTC Through Various Services"	Amuksiddha Shrimant Pujari Dr. S. K. Patil	186
31	Digital Library Organization and Its Challenges for Libraries.	Asso. Prof Mr Gavali A.B. Asst. Prof. Mr. Deokar S.M.	192

The Role of E-Resources in Library

Mr. Anil Anandrao Jewalikar

Abstract:

This paper is focused on various aspects of E-Resources deal with library. Information technology has made it more user friendly, speedy and comfortable to stored. Electronic resources are easily accessible in remote areas with solve storages problems. The e-resources on magnetic and optical media have a vast impact on the collection of any libraries. Now a days, we adopted new techniques and methods in libraries, to handle electronic information. Electronic information, resources are becoming more and more important for libraries in the academic institutions. The advent of technology has made the libraries to create globally new things to its collection. In short the paper to understanding an overview about the e-resources, describes a few advantages and disadvantages.

[Key Words: E-Resources, Open Access Resources, Academic Library]

Introduction:

At the present time, we follow the new techniques and methods in libraries, to deal with electronic information. Electronic information, resources are becoming more and more important for libraries in the academic institutions. An electronic resource is defined as a resource which require computer access or any electronic product that delivers a collection of data, be it text referring to full text bases, electronic journals,

Mr. Anil Anandrao Jewalikar, Librarian, Department of Library
Shriman Bhausaheb Zadbuke Mahavidyalaya, Barshi Dist. SolapurM r .
Singal Jaysing P. Research Student, Department of Sociology
Dr. B. A. M. University, Aurangabad

image collections, other multimedia products and numerical, graphical or time based, as a commercially available title that has been published with an aim to being marketed. These may be delivered on CD ROM, on tape, via internet and so on. (Md. Ashikuzzaman, 2014) E-resources give solutions and make easily to the challenges of the traditional libraries such as data storage in digital form.

In the 'electronic library,' resources were often based on digitized copies of the library's own holdings, and digitized surrogates of physical resources including items located in other institutions or databases, its available specifically through the user's own library. (D. D. Rusch-Feja, 2001) E-resources way to achieve the information sharing need by very effectively. They refer to information sources in electronic form. (Kenchakkanavar, A. Y., 2014) The different types of e-resources for example E-books, E-journals, E-databases, E-Proceedings, E-Manuscripts, E-Thesis, E-Newspaper, Internet / Websites etc.

E-Resources:

E-resources (electronic resource) is that, "Information (usually a file) which can be stored in the form Electrical signal usually, but not necessary on a computer. (Md. Ashikuzzaman, 2014)

According to Library and Information Technology Glossary "Term used to describe all of the information products that a library provides through a computer network... .." (LSIT, Feb. 2020) According to Wikipedia, Electronic Resources means "Information (usually a file) which can be stored in the form of electrical signals, usually on a computer; Information available on the Internet". (Wikipedia, Feb 2019)

According to Gradman glossary, "A publication in digital format which must be stored and read on a computer device. There are two types: Direct access: these are physical objects such as CD-ROMs, diskettes, computer tapes, and computer cards, containing text, images etc.

Advantages of E-Resources :

1. Easy availability
2. Speedy accessibility
3. Cost Effectiveness
4. The users approach to its content in new way's by single click of mouse.
5. High Capacity of storage.
6. Speed of access of latest information
7. Eliminates printing and postage cost

Types of E-Resources:

E- Books:

An electronic book is a book publication made available in digital form, consisting of text, images, or both, readable on the flat-panel display of computers or other electronic devices. (Gardiner, E. and Ronald G. M. 2010:64) Although sometimes defined as "an electronic version of a printed book", some e-books exist without a printed equivalent. E-books can be read on dedicated e-reader devices, but also on any computer device that features a controllable viewing screen, including desktop computers, laptops, tablets and smartphones. (Wikipedia, 2020)

Format of eBooks

Native E-book formats:	
Amazon Kindle and Fire tablets	AZW, AZW3, KF8, non-DRM MOBI, PDF, PRC, TXT
Barnes & Noble Nook and Nook Tablet	EPUB, PDF
Apple iPad	EPUB, IBA (Multitouch books made via iBooks Author), PDF
Sony Reader	EPUB, PDF, TXT, RTF, DOC, BBeB
Kobo eReader and Kobo Arc	EPUB, PDF, TXT, RTF, HTML, CBR (comic), CBZ (comic)
Pocket Book Reader and Pocket Book Touch	EPUB DRM, EPUB, PDF DRM, PDF, FB2, FB2.ZIP, TXT, DJVU, HTM, HTML, DOC, DOCX, RTF, CHM, TCR, PRC (MOBI)

E-Journal:

Electronic journals, also known as e-journals, e-journals, and electronic serials, are scholarly journals or intellectual magazines that can be accessed via electronic transmission. (Wikipedia, 2019) This the most generally utilized advanced resource. No. of e-journals are made accessible by the business offices, scholastic and the organizations advancing open access activity. The entire substance of the journal including the back records could be scan for any theme. E-journals may be defined very broadly as any journals, magazine, e-zine, webzine, newsletters or any type of electronic serial publication, which is available over the internet. E-journals are mostly useful tool for researchers.

E-Databases:

Database, also called electronic database, any collection of data, or information that is specially organized for rapid search and retrieval by a computer. Databases are structured to facilitate the storage, retrieval, modification, and deletion of data in conjunction with various data-processing operations. (Encyclopedia of Britannica. 2020) E-database is an organized collection of information is of a particular subject or multidisciplinary subject ares.

E-Thesis and Dissertation:

E-Thesis and Dissertation are now very useful tool to collect large data for specific subject. This is a very useful service for users or mostly researchers. It reduces the duplication of research works and gives assistance for the selection of the research area to the users of the libraries. The digital technology has proved very beneficial for the preservation of theses in the digital format over the internet. Ex. Shodhganga, Shodhgangotri, Shodhsindu etc.

Also various E-resources available as E-Zine, E-News, E-Papers, E-Reference books, CD-ROMs, Consortia etc.

Need of E-Resources for libraries:

The e-resources are valuable for scholastic libraries. To provide E-Resources to users, the automation of library is most important. It maintains a database as the collection of e-materials and provides services in digital form. Many libraries traditionally have been repositories of local information and heritage document such as manuscripts, rare books, maps, photographs and paintings, etc. Quickly communication and data access and recovery, inquire about outcomes, new innovations are imparted speedly to the end users. Library operation such as – circulation, acquisition, serial control, cataloguing, documentation, information retrieval, resources-sharing, library management, library budget and finance control etc. is user-friendly because of e-resources. The users of libraries requires the latest and pinpointed information in their respective fields, Its make easily through E-resources.

Conclusion:

In present day prizes of printed materials are increasing in such situation E-resources plays a vital role for libraries. Smartly use of e-resources would elevate the libraries visibility and importance on global level. E-resources prime way to achieve the information sharing needs. The effectively implementation of e-resources proves accurate that 'Every reader should get information at any time'. These new age of technological services are changes in the library operations. E-resources are useful for libraries as well as each and every users of the society.

An electronic book is a book publication made available in digital form, consisting of text, images, or both, readable on the flat-panel display of computers or other electronic devices. (Gardiner, E. and Ronald G. M. 2010:64) Although sometimes defined as "an electronic version of a printed book", some e-books exist without a printed equivalent. E-books can be read on dedicated e-reader devices, but also on any computer device that features a controllable viewing screen, including desktop computers, laptops, tablets and smartphones. (Wikipedia, 2020)

Format of eBooks

Native E-book formats:	
Amazon Kindle and Fire tablets	AZW, AZW3, KF8, non-DRM MOBI, PDF, PRC, TXT
Barnes & Noble Nook and Nook Tablet	EPUB, PDF
Apple iPad	EPUB, IBA (Multitouch books made via iBooks Author), PDF
Sony Reader	EPUB, PDF, TXT, RTF, DOC, BBeB
Kobo eReader and Kobo Arc	EPUB, PDF, TXT, RTF, HTML, CBR (comic), CBZ (comic)
Pocket Book Reader and Pocket Book Touch	EPUB DRM, EPUB, PDF DRM, PDF, FB2, FB2.ZIP, TXT, DJVU, HTM, HTML, DOC, DOCX, RTF, CHM, TCR, PRC (MOBI)

E-Journal:

Electronic journals, also known as e-journals, e-journals, and electronic serials, are scholarly journals or intellectual magazines that can be accessed via electronic transmission. (Wikipedia, 2019) This the most generally utilized advanced resource. No. of e-journals are made accessible by the business offices, scholastic and the organizations advancing open access activity. The entire substance of the journal including the back records could be scan for any theme. E-journals may be defined very broadly as any journals, magazine, e-zine, webzine, newsletters or any type of electronic serial publication, which is available over the internet. E-journals are mostly useful tool for researchers.

E-Databases:

Database, also called electronic database, any collection of data, or information that is specially organized for rapid search and retrieval by a computer. Databases are structured to facilitate the storage, retrieval, modification, and deletion of data in conjunction with various data-processing operations. (Encyclopedia of Britannica. 2020) E-database is an organized collection of information is of a particular subject or multidisciplinary subject ares.

E-Thesis and Dissertation:

E-Thesis and Dissertation are now very useful tool to collect large data for specific subject. This is a very useful service for users or mostly researchers. It reduces the duplication of research works and gives assistance for the selection of the research area to the users of the libraries. The digital technology has proved very beneficial for the preservation of theses in the digital format over the internet. Ex. Shodhganga, Shodhgangotri, Shodhsindu etc.

Also various E-resources available as E-Zine, E-News, E-Papers, E-Reference books, CD-ROMs, Consortia etc.

Need of E-Resources for libraries:

The e-resources are valuable for scholastic libraries. To provide E-Resources to users, the automation of library is most important. It maintains a database as the collection of e-materials and provides services in digital form. Many libraries traditionally have been repositories of local information and heritage document such as manuscripts, rare books, maps, photographs and paintings, etc. Quickly communication and data access and recovery, inquire about outcomes, new innovations are imparted speedly to the end users. Library operation such as – circulation, acquisition, serial control, cataloguing, documentation, information retrieval, resources-sharing, library management, library budget and finance control etc. is user-friendly because of e-resources. The users of libraries requires the latest and pinpointed information in their respective fields, Its make easily through E-resources.

Conclusion:

In present day prizes of printed materials are increasing in such situation E-resources plays a vital role for libraries. Smartly use of e-resources would elevate the libraries visibility and importance on global level. E-resources prime way to achieve the information sharing needs. The effectively implementation of e-resources proves accurate that 'Every reader should get information at any time'. These new age of technological services are changes in the library operations. E-resources are useful for libraries as well as each and every users of the society.

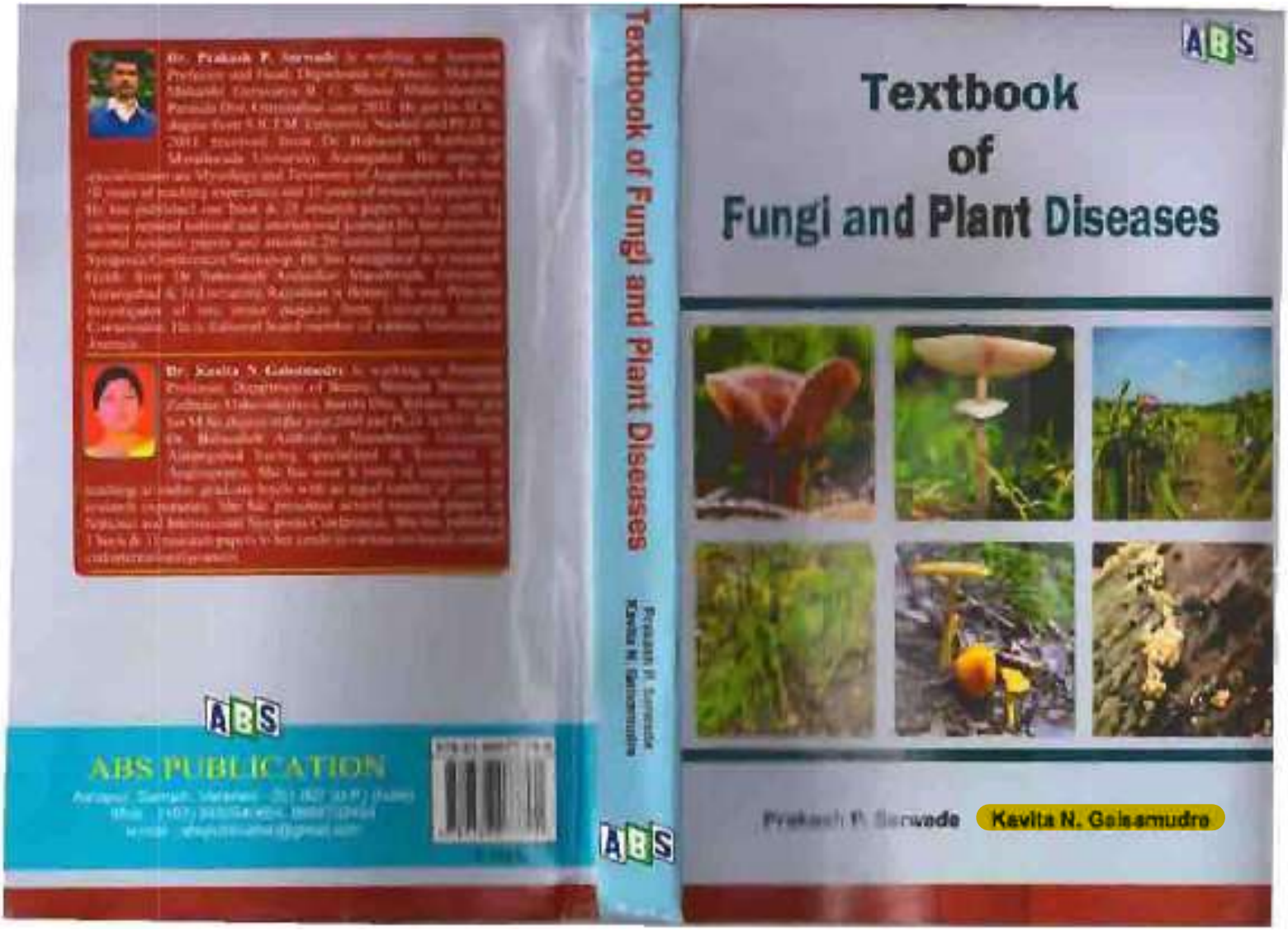
Textbook of Fungi and Plant Diseases
ABS PUBLICATION
ABS
Textbook
of
Fungi and Plant Diseases
Kavita N. Gaisamudre

Textbook of Fungi and Plant Diseases

© Authors

First Published : 2015

ISBN 978-93-85377-29-0

₹ 1195/-

Published by :
ABS PUBLICATION
Ashapur, Sarnath, Varanasi - 221007 (U.P.) (India)
Mob : (+91) 9450/0/67654, 9889132434
e-mail : [illegible]@gmail.com

[No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of the publisher]

Laser Typesetting & Design by
Shikha Graphics
shikhagraphics@gmail.com

Printed at :
Puja Printers

Preface

The importance of fungi as agents of plant and human disease, producers of industrial and pharmacological products and decomposers has spurred scientists worldwide to study their biology. The impact that fungi have with regards to plant health, food [illegible] and human nutrition is staggering.

The present book on Text book of Fungi and Plant Diseases is an attempt to provide the basic concept with indepth information to [illegible] students for U.G. and P.G. and researchers. [illegible] to effectively introduce various topics of [illegible] communities. It is an issue of direct [illegible] and hence of major economic importance. [illegible] and comprehensive knowledge of [illegible], their symptoms, effects and [illegible] of a student in the field of [illegible] in accordance [illegible] centres. [illegible] course of plant pathology [illegible].

We [illegible] thanks to Mr. Sanjay Nimbalkar, [illegible] Mandal, Osmanabad and [illegible] University Aurangabad, Dr. [illegible] Mahavidyalaya [illegible] for their constant support and encouragement.

We express our sincere thanks to Hon. Smt. [illegible] Ex M.L.A., Ex M.L.C., Chairperson, [illegible]

20

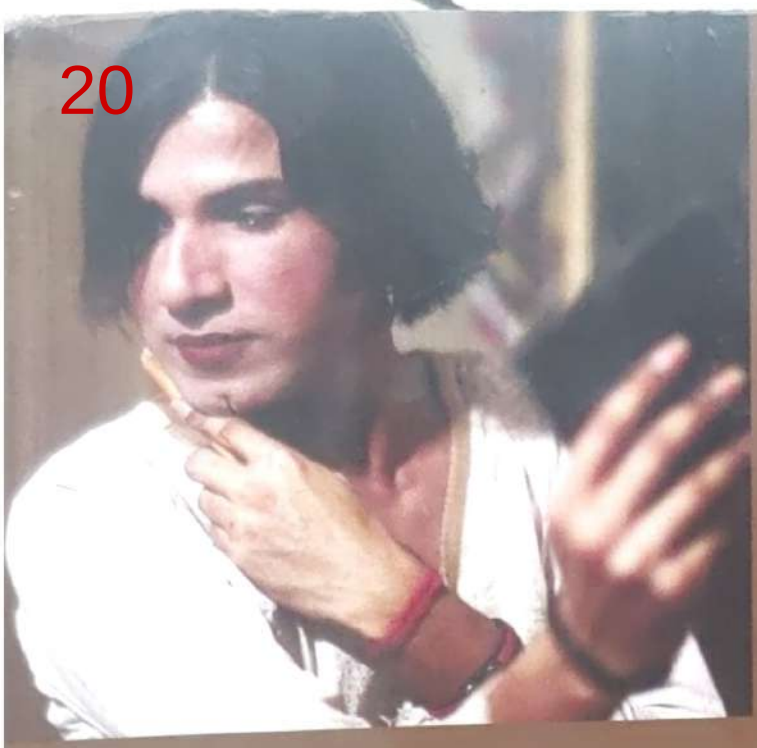

21 वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श

संपादक
डॉ. एस. वाय. होनगेकर, डॉ. आरिफ़ महात
सह संपादक : विश्वनाथ सुतार

21 वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श

संपादक

डॉ. एस. वाय. होनगेकर

डॉ. आरिफ़ महात

सह संपादक

विश्वनाथ सुतार

ए. बी. एस. पब्लिकेशन

वाराणसी-221 007

प्रकाशक
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी-221 007 (उ० प्र०)
मो०: 09450540654, 09415447276

ISBN : 978-93-86077-64-6

© संपादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 950.00 (नौ सौ पचास रुपये मात्र)

शब्द-संयोजन : विष्णु ग्राफिक्स

मुद्रक : पूजा प्रिण्टर्स
बसंत विहार, नौबस्ता

IKKISAVI SHATI KA HINDI SAHITYA : NAV VIMARSH

By Ed. Dr. S. Y. Hongekar, Dr. Arif Mahat

Co. Ed.Dr. Vishvanath Sutar

Price : Rs. Nine Hundred Fifty Only

अनुक्रम

1. किन्नर विमर्श

1. 21वीं सदी की हिंदी कविताओं में अभिव्यक्त किन्नर विमर्श — 19–27
   डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले

2. "थर्ड जेन्डर विमर्श और हिंदी नाटक" — 28–35
   प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर

3. "21 वी सदी कें हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्ष (थर्ड जेंडर विमर्श)" — 36–39
   डॉ. भास्कर उमराव भवर

4. "आधी कृति' में चित्रित किन्नर विमर्श" — 40–43
   प्रा. सुहास अंगापुरकर

5. "विजय तेंदूलकर के 'मित्राची गोष्ट' नाटक में किन्नर समस्या का चित्रण" — 44–46
   डॉ. संजय चोपडे,

6. समकालीन समाज और साहित्य में तृतीय लिंग विमर्श — 47–54
   डॉ. राहुल उठवाल

7. साहित्य, समाज एवं ट्रांसजेंडर : दशा और दिशा — 55–60
   वाडगुरे सतीश

8. 'आधुनिक हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श' — 61–64
   डॉ० नजमा मलेक

9. किन्नर समाज सम्मान की दरकार — 65–69
   वंदना शर्मा

10. 21वीं सदी के हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित 'थर्ड जेंडर' विमर्श 70–74
प्रा. रगडे पी. आर.

11. तृतीय लिंगी समाज : साहित्यिक विमर्श के आईने में 75–78
प्रा. हिरामण देवराम टोंगारे

12. किन्नरों का इतिहास व उनकी वर्तमान सामाजिक दशा 79–83
दीपिका राना

2. किसान विमर्श

1. फाँस : वर्तमान कृषि और किसानी का दस्तावेज 84–95
गिरीश काशिद

2. किसान–ए–दास्तानः आखिरी छलांग 96–99
प्रा. संतोष तुकाराम बंडगर

3. संजीव के 'फाँस' उपन्यास में किसान विमर्श 100–104
प्रा. डॉ. गजानन चव्हाण

4. किसान जीवन की दर्दनाक स्थिति – फाँस 105–109
डॉ. सरिता बाबासाहेब बिडकर

5. 21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान विमर्श (सदानंद देशमुख के 'बारोमास' उपन्यास के संदर्भ में) 110–116
डॉ. नारायण विश्णु केसरकर

6. किसान की आत्महत्या का यथार्थ चित्रांकन'' 117–119
प्रा. मारूफ मुजावर

7. कपास उत्पादकों का दर्द : कापूसकाळ 120–126
डॉ. एकनाथ श्रीपति पाटील

8. वीरेंन्द्र जैन के उपन्यासों में चित्रित किसान विमर्श 127–130
प्रा.डॉ. विनायक बापू कुरणे

किसान विमर्श

1

फाँस : वर्तमान कृषि और किसानों का दस्तावेज

संजीव हिंदी साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण कथाकार हैं। हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद और रेणु की परंपरा को आगे बढ़ाने में उनका अहं योगदान हैं। उन्होंने अपने लेखन के आरंभिक दौर से निरंतर नई जमीन की तलाश की है। जमीनी रचनात्मकता यही उनके लेखन की सबसे बडी सामर्थ्य है। एक प्रतिबध्द लेखक अपने परिवेश और समकालीन संदर्भों को नजरअंदाज नहीं कर सकता। संजीव तो एक अत्यंत प्रतिबध्द, संवेदनशील और बेचैन कथाकार हैं। लेखन उनका धर्म है। एक स्थान पर उन्हें किए प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था, 'मैं क्यों लिखता हूँ यह ऐसा प्रश्न है कि मैं क्यों जिंदा हूँ।' वे लेखन में गोगोल को प्रेरणा मानते हैं। गोगोल ने यह कहा था कि मैंने वह नहीं लिखा जो मैं लिख सकता था, मैंने वह भी नहीं लिखा जिसकी मेरे देश के लोगों ने मुझसे मॉग की बल्कि मैंने वह लिखा जिसकी मेरे देश को जरूरत थी। यही बात संजीव के लेखन पर खरी उतरती है। संजीव के उपन्यास और कहानियॉ इसके प्रमाण हैं।उनके 'सर्कस', 'पॉव तले की दूब','धार', 'सावधान नीचे आग है', 'जंगल जहॉ शुरू होता है', 'आकाशचंपा', 'सूत्रधार', 'रह गई दिशाएँ इसी पार' ये सभी उपन्यास उल्लेखनीय हैं। वे हर उपन्यास में एक वर्जित क्षेत्र की यात्रा करते हैं और उससे जुड़े तमाम संदर्भों को तराशते हैं। उन्होंने अपनी उपन्यास यात्रा में कोयला अंचल, सर्कस, डाकू समस्या, आदिवासी जीवन, भिखारी ठाकुर, संवेदनशून्यता, लोककला, जैसे कई संदर्भों को उजागर किया है। उनके उपन्यास कल्पनात्मक नहीं तो यथार्थ की भूमि पर खड़े है। वे आम आदमी की पुरजोर वकालत करते हैं। उनकी दृष्टि समाजशास्त्रीय, रचनात्मक और शोशक के प्रतिरोध की है। उपन्यास लिखना उनके लिए शोध होता है। इसी श्रृखंला में संजीव का ताजा उपन्यास 'फॉस' एक ज्वलंत यथार्थ को उजागर करता है। इसमें संजीव ने किसान आत्महत्या की समस्या को उठाया है।

कथा तो एक क्षेत्र की है लेकिन उसकी अभिव्यक्ति को व्यापक बनाया है। उपन्यास की भाषा शैली में क्षेत्रीय जीवन को ध्वनित करने की सामर्थ्य है।

संजीव ने इस उपन्यास को पूरा देशी बाना चढ़ाया है। महाराष्ट्र में मानवीयता का अलख जगानेवाले सुधारकों के कार्य को इसमें प्रस्तुत किया है। इसमें, दादाजी खोब्रागडे, देवाजी तोफा आदि स्वयं पात्र बनकर उपस्थित है। शिवाजी महाराज, बाबासाहब आंबेडकर, शाहू महाराज, संत गाडगे बाबा, अण्णा हजारे पोपट पवार, सिंधुताई सपकाळ आदि के कार्य का भी यथाप्रसंग उल्लेख आया है। संजीव के उपन्यास यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं। उनमें कोरी कल्पना को स्थान है। उपन्यास में उनकी दृष्टि समाजशास्त्रीय पाई जाती है। उपन्यास कला को उन्होंने एक नये ढंग से प्रस्तुत किया है। बशर्ते संजीव के उपन्यास को समझने में हिंदी समीक्षा चूक गई है। संजीव की कहानियों पर जितनी चर्चा हुई उतनी उनके उपन्यासों की नहीं हुई है। दरअसल उनके उपन्यास एक नई दृष्टि से समीक्षा की मॉग करते हैं। संजीव के समकालीन दौर में जो उपन्यास लेखन होता आया है उससे संजीव का उपन्यास लेखन अलग है। उनके उपन्यास न रंजन करते हैं न कलात्मकता बल्कि पाठकों को उस समस्या पर आत्मचिंतन करने को प्रवृत्त करते हैं। यही उनके उपन्यासों की सामर्थ्य है। उनके उपन्यास में जो नहीं है उसे खोजने की बजाय जो है वह उल्लेखनीय है।

डॉ. गिरीश काशिद
हिंदी विभाग,
एस. बी. झेड कॉलेज, बार्शी
जिला–सोलापुर 413411
महाराष्ट्र
मोबाईल–9423281750

●

21

EFFECT OF HEAVY METLAS ON SOME MAJOR CARPS A HISTOLOGICAL STUDY

Dr.Shahaji S. Chandanshive
Dr.Prakash Sarwade
Dr.Kavita Gaisamudre
Dr.Ashok Mohekar

EFFECT OF HEAVY METLAS ON SOME MAJOR CARPS
- A HISTOLOGICAL STUDY

© Chandanshive Shahaji Shivaji

❖ Publisher :
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ Printed by :
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ Page design & Cover :
Shaikh Jahuroddin,Parli-V

❖ Edition : August 2018

ISBN 978-93-87990-08-1

❖ Price : 299/ -

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed, Conclusions reached and plagiarism, if any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them. What so ever Disputes, if any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

Dedicated to
My Revered Parents,
Loving Brother,
Wife and Children

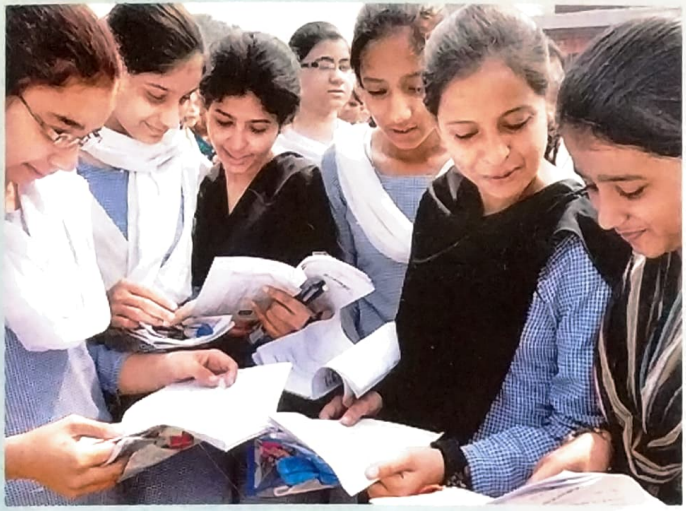

22

सोलापूर विद्यापीठ, सोलापूर व
रयत शिक्षण संस्थेचे
लक्ष्मीबाई भाऊराव पाटील महिला महाविद्यालय, सोलापूर

मराठी विभाग आयोजित

आंतरविद्याशाखीय आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्र

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या विचारांचा मराठी साहित्यावरील प्रभाव व महात्मा फुले यांचे जीवन व कार्य

रयत माउल

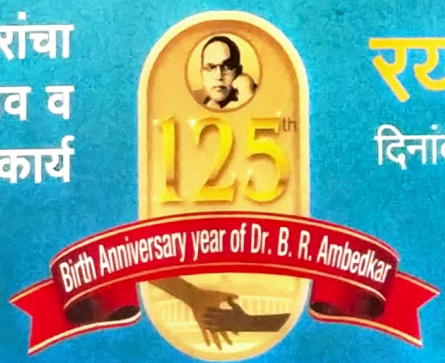

दिनांक ८ व ९ एप्रिल २०१

सोलापूर विद्यापीठ, सोलापूर व

रयत शिक्षण संस्थेचे

लक्ष्मीबाई भाऊराव पाटील

महिला महाविद्यालय, सोलापूर

मराठी विभाग आयोजित

आंतरविद्याशाखीय

आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्र

दिनांक ८ व ९ एप्रिल २०१७

विषय – डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या विचारांचा
मराठी साहित्यावरील प्रभाव व
महात्मा फुले यांचे जीवन व कार्य

रयत माउली

संशोधन अंक

मुख्य संपादक – **प्राचार्य सीताराम गोसावी**

संपादक – **डॉ. विजय रेवजे**

प्रा. दिलीप कोने

अनुक्रमणिका

१) भारतीय शेतकऱ्यांच्या वर्तमानकालीन समस्या आणि महात्मा जोतीराव फुलेंचे कृषि विषयक विचार - कल्याण नामदेव श्रावस्ती १

२) भारतीय संविधान आणि महात्मा फुले यांची विचारधारा – डॉ. हंसराज दत्तात्रय भोसले ५

३) भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या विचारांचा मराठी नाटकावरील प्रभाव - वैशाली सुरेश गाढे ११

४) महात्मा फुले एक शिक्षणतज्ञ – शेख म. रफी म. युसूफ १४

५) महात्मा फुले यांचे जीवन कार्य - श्रीमती बिरादार प्रतिभा रंगराव १७

६) आंबेडकरवाद आणि दलित साहित्य – डॉ. सारिपुत्र तुपेरे २१

७) समाज परिवर्तनात महात्मा फुले यांचे योगदान - प्रा.डॉ. आसिया शिरनी २४

८) दलित साहित्य हे आंबेडकरी विचारांचे संचित...! - प्रा. जवाहर मोरे ३०

९) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या विचारांचा उत्तम कांबळे यांच्या साहित्यावरील प्रभाव : एक आकलन - डॉ. शारदा कदम ३२

१०) 'महात्मा फुले यांचे शेती व शेतकऱ्यांविषयक विचार' - डॉ.कदम संतोष तुकाराम ३५

११) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि दलित कविता - महेश मंगनाळे ४०

१२) मराठी भटक्या-विमुक्तांच्या साहित्यातील आंबेडकरी जाणिवा - डॉ. संजय बालाघाटे ४३

१३) मराठी दलित कथेवरील आंबेडकरवादाचा प्रभाव - डॉ.भारत विठ्ठलराव शिंदे | डॉ.डी.पी.गडगीळे ४७

१४) साठोत्तरी मराठी साहित्य आणि आंबेडकरवाद : एक आकलन - ज्ञानेश्वर डाखोरे ५०

१५) महात्मा फुले यांचे सामाजिक व साहित्यिक योगदान - डॉ. नवनाथ दणाणे ५४

१६) महात्मा फुले यांचे शेतकरी चिंतन व सत्यशोधकी लेखन वारसा - ज्ञानदेव राऊत ५८

१७) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार आणि दलित कविता - प्रा.डॉ. विजय रेवजे ६२

१८) 'शेतकऱ्याचा आसूड' मधील समकालीनता - प्रा. अनिल रामचंद्र महाजन ६५

१९) महात्मा जोतीराव फुले : एक कर्ते सुधारक - सचिन गुंडीराम डेंगळे ६९

२०) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार आणि महाराष्ट्रातील चळवळी - प्रा. दिलीप कोने ७२

२१) मराठी कथासाहित्य आणि आंबेडकरवाद :एक अभ्यास - प्रा.डॉ.माणिक मानकर ७४

२२) 'आई समजून घेताना' आत्मकथनावरील आंबेडकरी विचारांचा प्रभाव - नागनाथ लक्ष्मण आवले ७८

२३) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे साहित्यनिर्मितीला चालना देणारे प्रेरणादायी विचार - डॉ. अनिल व्यंकटराव मुंडे ८१

२४) 'थांबा ! रामराज्य् येतय् !' या नाटकात प्रतिबिंबित झालेले डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार - प्रा.डॉ. विजयकुमार शिवदास ढोले ८४

२५) बाबासाहेबांच्या लोकशाहीतील शिक्षणाचे बाजारीकरण : कोंडण्यातलं जिणं... - प्रा. डॉ. एम. बी. धोंडगे ८८

२६) 'मराठी आत्मकथावरील प्रभाव' - डॉ. पैकेकरी एस.पी. ९२

२७) आंबेडकरांच्या प्रभावातून साकारलेली दलित कविता : एक चिंतन - प्रा.डॉ. गायत्री गाडेकर ९७

२८) महात्मा फुले यांच्या जीवन व कार्याचा मराठी साहित्यावर प्रभाव - डॉ. डिगोळे बालाजी विठ्ठलराव १०२

२९) युगप्रवर्तक महात्मा जोतीराव फुले - प्रा.डॉ. शीला दत्तात्रेय गाढे १०५

३०) मराठी स्त्री-नाटककारांच्या नाटकातील महात्मा फुले यांचे क्रांतिकारी विचार :
विशेष संदर्भ 'पहिला महात्मा' व 'मृत्यू माघारी गेला' - प्रा.डॉ.बालाजी पोतुलवार १०७

३१) प्रबोधन आणि परिवर्तनाचा प्रभावी वाङ्मय प्रकार : दलित कविता - प्रा.परमेश्वर हटकर ११३

३२) प्रज्ञा लोखंडे यांच्या कवितेतील स्त्री विषयक जाणिवांचा विचार - डॉ.शिवलिंग मेनकुदळे ११६

३३) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची पत्रकारिता : एक मीमांसा - प्रा.संतोष मारकवाड १२२

३४) मराठी लौकिक गीतांवरील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा प्रभाव - श्री. सुहास बापू मोरे १२५

३५) शाहीर वामन कर्डकांच्या शाहिरीतील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे विचार - प्राचार्य. सीताराम गोसावी १२९

३६) आंबेडकरी चळवळीची प्रज्ञा लोखंडे यांची कविता - डॉ. सीमा नाईक - गोसावी १३१

३७) आंबेडकरी चळवळीचे वैचारिक व सामाजिक मंथन - प्रा.क्रांती पैठणकर १३४

३८) भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या विचारांचा मराठी आत्मकथेवरील प्रभाव - प्रा. डॉ. वामदेव कांबळे १३६

३९) मराठी कवितेवरील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा प्रभाव - प्रा.डॉ. भारत हंडीबाग १३८

४०) २००० नंतरच्या मराठी कवितेतील आंबेडकरी जाणीवा - डॉ. तुळशीराम उकिरडे १४१

४१) उत्तरआधुनिकता आणि नव्वदोत्तरी आंबेडकरवादी कविता – प्रा. देवानंद सोनटक्के १४३

४२) डॉ.आंबेडकरांच्या विचाराचा मराठी कवितेवरील प्रभाव - प्रा. मोहन बाबुराव चव्हाण १५४

४३) नवभारत निर्मितीतील डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर - कु. सुर्यवंशी रागिणी चंद्रकांत १६०

४४) महात्मा जोतीराव फुले : एक कृतीशील समाजसुधारक - प्रा. ससाने सतिश गंगाराम १६२

४५) महात्मा जोतीराव फुले यांचे शैक्षणिक कार्य - डॉ. संतोष पाटील १६५

ISBN No. 978-81-921752-8-7

महात्मा फुले यांचे सामाजिक व साहित्यिक योगदान

डॉ. नवनाथ दणाणे
सहयोगी प्राध्यापक मराठी विभाग प्रमुख
श्रीमान भाऊसाहेब झाडबुके महाविद्यालय, बार्शी
जि. सोलापूर भ्र.ध्वनी- ९८८१४८३४५६
email : nrdanane@gmail.com

प्रास्ताविक

आधुनिक समाजपरिवर्तनाच्या चळवळीचे जनक, एक कृतीशील विचारवंत व क्रांतीकारी समाजसुधारक म्हणून महात्मा फुले यांना ओळखले जाते. प्रस्थापित विषमता प्रवर्तक ब्राह्मणी व्यवस्थेच्या विरुध्द थेट आणि ठोस असा विद्रोह पुकारणारे, क्रांतिकारी साहित्यिक म्हणूनही त्यांना ओळखले जाते. आधुनिक साहित्य प्रवाहांना दिशादर्शक अशा प्रकारचे त्यांचे लेखन आहे. विशेषत: दलित, ग्रामीण, स्त्रीवादी, आदिवासी, मुस्लीम व कामगार साहित्य प्रवाहांना प्रेरणा देणारे आणि क्रांतिच्या दिशेने घेऊन जाणारे, त्यांचे साहित्यिक योगदान आहे.

महात्मा फुले यांच्या जीवनकार्याचा आढावा घेताना अगदी स्पष्टपणे दिसते की, सामाजिक धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक अशा सर्वच क्षेत्रातील अमूलाग्र परिवर्तनासाठी त्यांनी आयुष्यभर निकराचा लढा दिलेला आहे. बुध्दीप्रामाण्यावादी व इहवादी दृष्टीकोनातून आपले समाजकार्य व साहित्यलेखन करताना विवेकवादी, तर्कशुध्दतेला त्यांनी अधिक प्राधान्य दिले आहे. विवेकवादी तर्कशुध्दतेच्या जोरावारच धार्मिकतेच्या नावाखाली लुबाडणूक करणाऱ्या स्वार्थी पुरोहितशाहीचा ते पर्दापाश करतात. चार्तुवर्ण्य, जातिभेद, स्त्रीदास्य व अस्पृश्यता या सारख्या विषमताप्रवण गोष्टींचा धर्माशी काहीही संबंध नाही, असा एकंदर विचार ते मांडतात. मानवी समतेच्या आड येणाऱ्या कोणत्याही गोष्टींना ते आपले लक्ष बनवितात. समता, न्याय, बंधुता, नीती, सदाचार, सहिष्णूता, आत्मपरिक्षण, शिक्षण यासारख्या मानवीमूल्यांच्या प्रतिष्ठापणेसाठी ते आपले जीवनकार्य समर्पित करतात.

व्यक्तिमत्त्वाची जडण - घडण व प्रभाव

२७ फेब्रूवारी १८२७ साली पुणे येथे गोविंदराव व चिमणाबाई यांच्या पोटी जोतीरावांचा जन्म झाला ."महात्मा" ही त्यांना लोकांकडून मिळालेली पदवी आहे. जोतीराव केवळ नऊ महिन्याचे असतानाच त्यांच्या आईचा मृत्यू झाला. वयाच्या ७ व्या वर्षी जोतीरावांना त्यांच्या वडिलांनी शाळेत दाखल केले. परंतु प्राथमिक शिक्षण पूर्ण करताच गोविंदराव जोतीबांचे शिक्षण बंद करतात. तत्कालीन समाजामध्ये शिक्षणाकडे पाहण्याची मानसिकता जुन्या वळणाची होती. अशा विचारांच्या काही लोकांकडून गोविंदरावांना सल्ले दिले जावू लागते की, जोतीरावांना जास्त शिकवल्यास तो कामातून जाईल. त्यामुळे गोविंदराव काही काळासाठी त्यांचे शिक्षण बंद करतात. परंतु पुन्हा गफवार बेग मुन्शी व ख्रिस्ती धर्मोपदेशक लिजिटसाहेब यांनी जोतीरांवाची तल्लख बुध्दीमता पाहून पुढेच शिक्षण घ्यायला पाहिजे, असे गोविंदरावांच्या गळी उतरवले. त्यामुळे पुढे १८४१ मध्ये गोविंदरावांनी जोतीबांना एका स्कॉटिश मिशनच्या शाळेत घातले. १८४७ मध्ये जोतीबांनी इंग्रजी शाळेतील शिक्षण पूर्ण केले. जोतीबांना तिथे वॉशिग्टन, मार्टिन ल्युथर, थॉमस पेन यांसारख्या विचारवंताची चरित्रे वाचायला मिळाली. त्याचबरोबर अमेरिकेचा स्वातंत्र्य लढा, फ्रान्स राज्यक्रांती यासारख्या मानवी स्नातंत्र्याच्या लढ्यांचाही त्यांना परिचय झाला.

महात्मा फुले यांच्या व्यक्तिमत्त्वावर चार्वाक, बुध्द कबीर, तुकाराम, दादोबा पांडुरंग या देशी विचारवंत समाज सुधारकांबरोबरच, थॉमस पेन, मार्टिन ल्युथर, रेमिचल, डॉ. स्टिव्हनसन, डॉ. विल्यम इत्यादी पाश्चात्य विचारवंताच्या

ISBN No. 978-81-921752-8-7

वास्तवाचे भान प्राप्त करुण देतात. फुले पारंपरिक मराठी साहित्यातील काल्पनिकता, तर्कशून्यता, विवेकहीनता, असंवदेनशीलता व सामाजिक उत्तरदायित्त्वाचा अभाव स्पष्ट करतात. शेती, शेतकरी, दलित, स्त्री, कामगार यांची होणारी कुचेष्टा थोपवतात आणि त्यांच्याकडे मानवीमूल्यांच्या पातळीवर पाहण्याची दृष्टी प्राप्त करुण देतात. त्यांचे मराठी साहित्यातील हे योगदान वादातीत आहे. महात्मा फुले यांच्या समाजकार्य व साहित्यिक योगदानामागे शोषित, पीडित वर्गाबद्दलची मानवीय सहानुभूती दिसते. त्यांना त्याचें न्याय हक्क व माणूसपण मिळवून देण्याची कटिबध्दता, हेच त्यांच्या जीवन कार्यामागील प्रयोजन दिसते.

महात्मा फुले यांच्या सामाजिक व साहित्यिक योगदान व प्रयोजनाबद्दल महापंडित शरद पाटील म्हणतात, "वर्ण जातिव्यवस्थेची चौकटच न मानणारा आणि चौकटीविरुध्द आपापल्या क्षेत्रात आपापल्या परीने झगडत राहिलेला 'अनेकमुखी' व 'अशांत' महाप्रवाह या देशात होता, हे दाखविण्याचे आणि त्याचा आमरण पाठपुरावा करायचे अपूर्व व अनन्य काम फुलेंनी केले. या महाप्रवाहाचे दायत्व त्यांनी त्यांच्या यशापयशाकडे पाहून स्वीकारले नाही, तर सर्वकष मुक्तीला मदतकारक हाच प्रवाह असू शकतो, या जीवननिष्ठेतून त्यांनी सम्यक भारतीय विद्रोहाची घोषणा केली"[४] शरद पाटील येथे महात्मा फुले यांच्या जीवन कार्यामागील प्रयोजन अगदी अचूकपणे स्पष्ट करतात. सुप्रिसध्द विचारवंत रा.गा. जाधव यांचे पुढील विवेचनही या दृष्टीने महत्त्वपूर्ण आहे. ते म्हणतात, "जोतीरावांच्या काळात जी सामाजिक परिस्थिती रुढ होती, तिचा प्रभाव त्यांच्या विचारप्रणालीवर पडणे स्वाभाविकच होते. — जे जीर्ण आहे, जाचक आहे, जुने आणि जीवघेणे आहे, ते सर्व संपूर्णपणे टाकून द्यावयाचे आणि त्याच्या जागी नवे प्रस्थापित करावयाचे, ही जोतीरावांची भूमिका होती"[५] रा.ग. जाधव येथे महात्मा फुले यांच्या जीवन कार्यामागील प्रयोजन स्पष्ट करताना, त्यामागील आधुनिक व मानवतावादी दृष्टीकोणही अधोरेखित करतात.

एकूणच महात्मा फुले यांच्या सामाजिक व साहित्यिक योगदानाचा विचार करता, प्रकर्षाने असे दिसते की, शोषित, पीडित, वंचित तसेच अज्ञान व दारिद्र्यात खितपत पडलेल्या समाजाला त्यांचे नैसर्गिक न्याय हक्क मिळवून देणे, त्यांना त्यांच्या आत्मोध्दाराचा मार्ग दाखविणे, ज्यांच्यामध्ये आत्मतेजाचे व स्वाभिमानाचे बीज रोवणे, सामान्य माणसाची सर्वाथाने मुक्तता करणे, स्वार्थी व मतलबी धर्म मार्तंडांचे थोतांड उघड करणे, बुध्दिनिष्ठा व मानवतावादी दृष्टिकोन दृढ करणे हे त्यांच्या जीवनकार्याचे अंतिम ध्येय होते.

संदर्भ

१) संपा. धनंजय कीर स.ग. मालसे, य.दि.फडके : 'महात्मा फुले समग्र वाङःमय', महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई सुधारीत सहावी आवृत्ती, नोव्हेंबर, २००६ पृ.६१५

२) तत्रेव : पृ.४५७

३) जनार्दन वाघमारे : 'महात्मा फुलेचा सामाजिक क्रांतिवाद' (लेख) महात्मा फुले गौरव ग्रंथ (खंड पहिला) संपा. हरी नरके, य.दि. फडके, महात्मा फुले चरित्र साधने, प्रकाशन समिती, महाराष्ट्र राज्य, शिक्षण विभाग, मंत्रालय, मुंबई सुधारीत द्वितीयावृत्ती, २८ नोव्हेंबर १९९१, पृ.६८

४) शरद पाटील : 'फुले वादाचे पुनरुत्थान ' (लेख) महात्मा फुले गौरव ग्रंथ (खंड पहिला) संपा हरी नरके, य.दि. फडके, महाराष्ट्र शासन प्रकाशन समिती मुंबई, सुधारीत द्वितीयावृत्ती, २८ नोव्हेबर१९९१ पृ. २९७

५) रा.ग. जाधव : 'महात्म्याचा आकृतिबंध' (लेख) 'महात्मा फुले साहित्य आणि चळवळ' संपा. हरी नरके महाराष्ट्र शासन प्रकाशन समिती, मुंबई प्रथमावृत्ती २००६ पृ. १४१

□□

WOMEN EMPOWERMENT THROUGH QUALITY EDUCATION

Reaccreditated With 'A' Grade By NAAC

College With Potential For Excellence

Recertified with ISO 9001 : 2008

National Child Labour Project

Karmaveer Parithoshak Awardee

Best College Award for Vittiya Saksharata Abhiyan by MHRD

Best College Award for NSS by Govt. of Maharashtra

Best College Award for 'Jagar Janivancha' (Gender Equality) by Govt. of Maharashtra

First Prize for RUSA Symbol Making by Govt. of Maharashtra

ISBN No. 978-81-921752-8-7

Published by –

Laxmibai Bhaurao Patil Mahila Mahavidyalaya,

Karmveer Bhaurao Patil Marg, Samrat Chowk,

Solapur – 413002. Maharashtra, India Ph. 02172620602

TALE OF SOLITUDE:

ANITA BROOKNER' S SELECT PROTAGONISTS

Dr. Vaibhav H. Waghmare

Dr. Vaibhav Harishchandra Waghmare is serving as Assistant Professor in the Department of English at Shriman Bhausaheb Zadbuke Mahavidyalaya, Barshi since January 2006. He took his undergraduate education from the same college, postgraduate education from Shivaji Mahavidyalaya, Barshi, qualified NET in 2004 and also took Master of Education degree from Shivaji University, Kolhapur in the same year. He has done his doctoral degree under the guidance of Dr. Sagare S.B. from Solapur University, Solapur in November 2012. He successfully completed one Minor Research Project funded by UGC. He has published more than 10 reseasch papers in different National and International journals. He has presented more than 15 papers in National and International conferences.

WIZCRAFT
Publications & Distribution

Registered Office:
129/498, Vasant Vihar, Near Old Pune Naka, Solapur- 413 001 (Maharashtra) India
09637335551, 07020828552 E-mail:wizcraftpublication@gmail.com

ISBN - 978-93-86013-96-5

9 789386 013965

Rs. 195/-

Tale of Solitude: Anita Brookner's Select Protagonists by Dr. Vaibhav H. Waghmare Wizcraft

TALE OF SOLITUDE:

ANITA BROOKNER' S SELECT PROTAGONISTS

Dr. Vaibhav H. Waghmare

23

119

24

काव्यालोक

संपादक

डॉ. अनिल साळुंखे, डॉ. गिरीश काशिद

ISBN : 978-93-80913-43-8

पुस्तक का नाम	:	काव्यालोक
संपादक	:	डॉ. अनिल साळुंखे, डॉ. गिरीश काशिद
©	:	संपादक
मूल्य	:	50/-रुपये मात्र
संस्करण	:	प्रथम 2017
प्रकाशक	:	दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता 3 सी-210, आवास विकास, हंसपुरम कानपुर - 208021
शब्द-सज्जा	:	शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	पूजा प्रिन्टर्स, कानपुर

Kavyalok

By : Dr. Anil Salunkhe, Dr. Girish Kashid

Price : Fifty Rupees Only

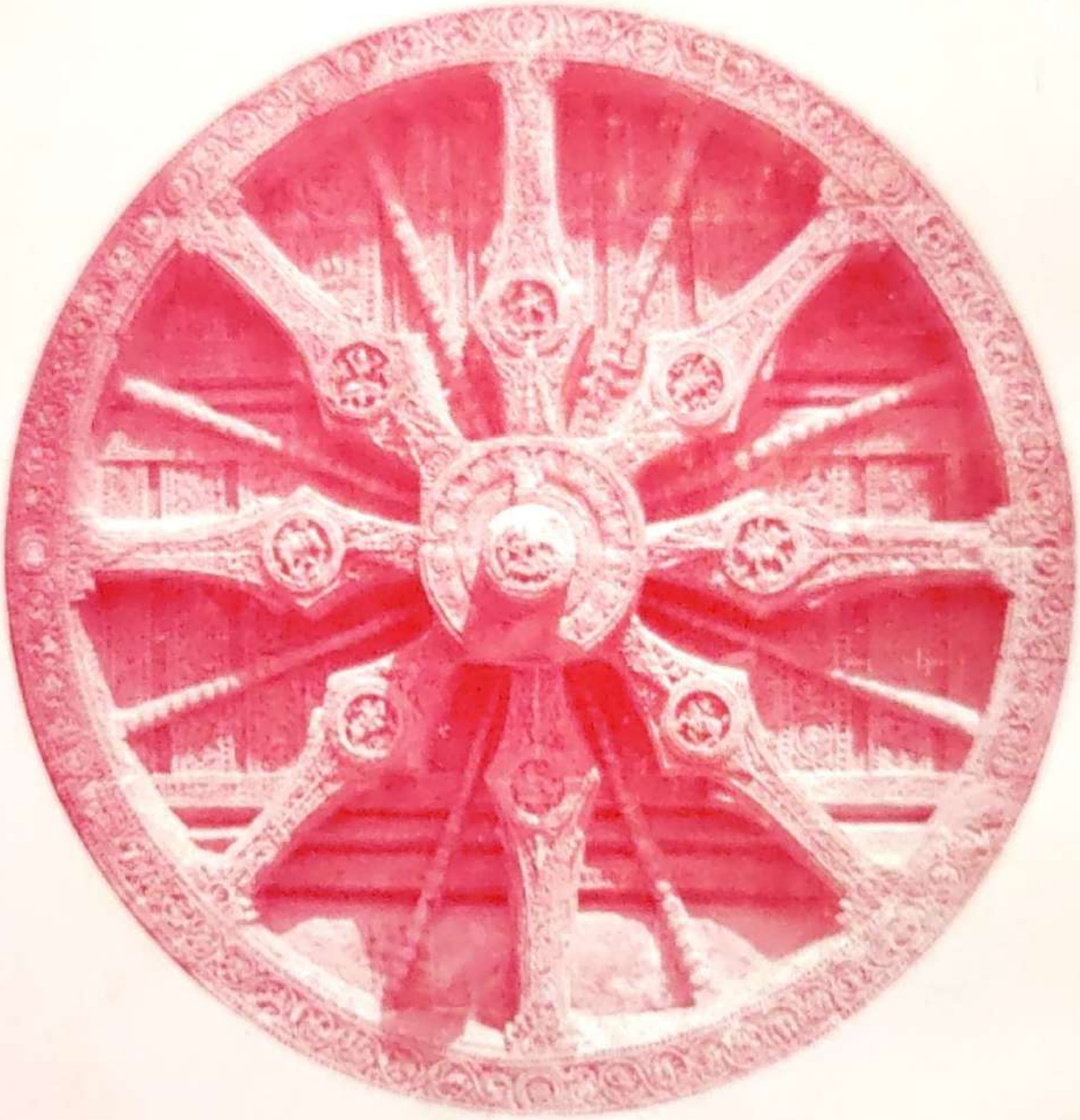

दिव्य

दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

3सी-210, आवास विकास, हंसपुरम्

नौबस्ता, कानपुर-208021

मो० : 09451424548

ISBN : 978-93-80913-43-8

9 789380 913438

₹ 50/-

2017-18

25

भारतीय भाषा और साहित्य चिंतन

संपादक मंडल

डॉ. अंबादास देशमुख, डॉ. रणजीत जाधव, डॉ. सतीश यादव

डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभूते

टर परिवार की ओर से नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ !!

BHARTIYA BHASHA AUR SAHITYA CHINTAN

AMBADAS DESHMUKH DR. & OTHER (Ed.)

Subject(s): **Criticism**

Sale Price: ~~₹ 1895.00~~

Discount: **15%**

₹ 1611.00 You Save: **₹ 284.00**

ADD TO CART

Book Details | About The Book

Title: **BHARTIYA BHASHA AUR SAHITYA CHINTAN**

Author: **AMBADAS DESHMUKH DR. & OTHER (Ed.)**

ISBN 13: **9789380788654**

ISBN 10: **9380788657**

Year: **2017**

Language: **HINDI**

Pages etc.: **680p**

Binding: **Hardbound**

Subject(s): **Criticism**

We use Cookies to track page analytics and to keep you logged in. By continuing to use this website, you agree to our use of cookies as explained in our Privacy Policy. Please read our Privacy Policy and Disclaimer for more information.
© 1999-2023 www.hindibook.com (All Rights Reserved). Designed by IndiaPRIDE.com

अनुक्रमणिका

1.	अंतःसंबंध की अवधारणा और स्वरूप – डॉ. नरसिंह प्रसाद दुबे	15
2.	मराठी भाषियों की हिंदी सेवा – डॉ. अंबादास देशमुख	21
3.	कृष्ण राज़दान : कश्मीरी हिन्दी के सेतु कवि – डॉ. रानी शंकर मिश्र	29
4.	हिंदी और भारतीय भाषाएँ : अंतः संबंध – डॉ0 हरिश्चन्द्र शाही	33
5.	मध्यकालीन निर्गुण संत काव्य की विशेषताओं के परिप्रेक्ष्य में संत उकाराम के दोहों व भजनों का मूल्यांकन – डॉ. एन.एस. परमार	44
6.	विदेशों में भारतीय भाषाओं का अंत संबंध – डॉ. ए. शारदा	51
7.	भारतीय भाषाओं का अंतः संबंध अनुवाद के जरिए – डॉ. सुप्रिया पी.	55
8.	हिन्दी, मराठी, तेलुगु तथा कन्नड़ भारतीय भाषाओं का अंतःसंबंधः एक अध्ययन – डॉ. जशु पटेल	58
9.	भारतीय भाषाओं का अंतःसंबंध – डॉ. मुकेश वसावा	67
10.	मराठी और हिंदी की महिला आत्मकथाएँ –डॉ. गिरीश काशिद	76
11.	तेलुगु भाषा का शब्दावली–स्त्रोत संस्कृत, हिन्दी और अन्य भाषाओं के विशेष संदर्भ में – प्रा. डॉ. विनोद कुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'	87
12.	हिंदी–तेलुगु की वचन कविता का तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. के. श्याम सुंदर	94
13.	हिन्दी–तेलुगु की नई कविता का तुलनात्मक अध्ययन – डॉ. रवी कुमार	98
14.	भारतीय भाषाएँ विदेशों में हिन्दी – डॉ0 वी. गोविन्द	102
15.	हिन्दी और तेलुगु में उपन्यास का पारिभाषिक स्वरूप – टी. सुमती	105

मराठी और हिंदी की महिला आत्मकथाएँ

- -डॉ. गिरीश काशिद

भारतीय साहित्य में आत्मकथानात्मक लेखन के संदर्भ यत्रतत्र मिलते हैं लेकिन विशुध्द गदय आत्मकथा आधुनिक काल में ही विकसित हुई। पाश्चात्य साहित्य के अनुकरण से यह विधा भारतीय साहित्य में विकसित मानी जाती है। आत्मकथा विधा पहले जर्मनी में और बाद में अंग्रेजी में विकसित हुई। उन्नीसवीं सदी के आरंभ में पाश्चात्य साहित्य में आत्मकथनात्मक लेखन का आरंभ हुआ। इसके बाद उसका वहाँ बहुमुखी विकास हुआ। भारतीय साहित्य में स्वतंत्र आत्मकथनात्मक लेखन की प्रवृत्ति नहीं मिलती। आरंभिक दौर से मध्यकाल के अंत तक अपने बारे में कुछ कहना तक आत्मप्रौढी माना जाता रहा। वैसे इसका एक सुखद उदाहरण सत्रहवीं सदी के मध्य में मिलता। सत्रहवीं सदी के मध्य में हिंदी में 'अर्ध्दकथा' नाम से पदय में लिखी आत्मकथा का होना एक महत्त्वपूर्ण घटना है। लेकिन इसके बाद इस विधा का विकास नहीं मिलता है। आधुनिक काल में देश का माहौल बदल गया। सांस्कृतिक संस्थाओं ने भारतीय पुनर्जागरण को गति दी। अंग्रेजों के आचार–विचार तथा जीवन दर्शन से भारतीय जनमानस प्रभावित हुआ। इससे भारतीय चिंतन की नई दिशाओं का उदघाटन हुआ। इससे मध्यकालीन साहित्यिक मान्यताओं के स्थान पर नई मान्यताएँ स्थापित हुई। कविता में मुक्तछंद आया और गदय का अविर्भाव हुआ। यह इस काल के साहित्यिक परिवेश में घटित दो महत्त्वपूर्ण घटनाएँ है। राष्ट्रीय जागरण के चलते साहित्य के संदर्भ बदल गए। नई चेतना के तहत नये साहित्य का निर्माण होने लगा। यह साहित्य अनुभूति और अभिव्यक्ति की दृष्टि से पूर्व साहित्य से अलग मिलता है। आशय और विशय दोनों दृष्टि से साहित्य में परिवर्तन हुआ। हिंदी में छायावाद काल के दौरान व्यक्ति का महत्त्व बढ़ा और इससे भी आत्मकथा के उदभव को प्रेरणा मिली ऐसा कह सकते हैं। इसी दौरान महात्मा गांधी की आत्मकथा तथा अन्य भारतीय भाशाओं से आत्मकथाओं के अनुवाद हिंदी में प्रकाशित हुए। इन आत्मकथाओं को काफी लोकप्रियता मिली। इस बदलते परिवेश ने आत्मकथा की राह को प्रशस्त किया ऐसा कह सकते हैं।

अंग्रेजी सत्ता के दौरान भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक जीवन में काफी परिवर्तन हुआ। इसी दौर में व्यक्तिवाद को महत्त्व प्राप्त हुआ। साहित्य में भी यथावकाश इसका प्रकटन हुआ। इस समय साहित्य मे कई संदर्भ में परिवर्तन

सामाजिक संरचना की जड़ता दृश्टिगोचर होती है।

भारतीय साहित्य में आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण के चलते विशिश्ट वैयक्तिकता को व्यक्त करनेवाली आत्मकथाएँ लिखी जाने लगी है। आत्मकथा के स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है। पहले असाधारण कार्य करनेवाली व्यक्ति ही आत्मकथा लिख सकती थी लेकिन अब साधारण व्यक्ति भी अपनी असाधारण अनुभूति को आत्मकथा के जरिए प्रस्तुत कर रही है। अब पाठक भी सामान्य आदमी की कथा की ओर आकर्शित हो रहा है। हिंदी आत्मकथा कमशः विकसित हुई है। इसमें कमशः संख्यात्मक और गुणात्मक विकास पाया जाता है। हिंदी महिला आत्मकथा का आरंभिक चरण यद्यपि उतना सशक्त नहीं है लेकिन वह कमशः प्रगल्भ बनता जा रहा है।

संदर्भ संकेत

1. पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ. 52
2. सं.राजेंद्र यादव,अर्चना वर्मा, देहरी भई विदेस, पृ. 21
3. आनंद यादव, आत्मचरित्र मीमांसा, पृ. 29
4. पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ.30
5. डॉ. सुमन राजे, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, पृ. 238
6. सीमोन द बोउवार, स्त्री उपेक्षिता, पृ. 369.
7. सं. कल्पना वर्मा, स्त्री विमर्शः विविध पहलू, पृ. 86 (बिगबैंग थ्योरी और महिला लेखन, डॉ. आशा उपाध्याय)
8. डॉ. के. एम.शर्मा, स्त्री विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य, पृ.160
9. सं. अरविंद जैन,प्रो. कमलाप्रसाद, स्त्रीः मुक्ति का सपना, पृ. 475
10. अर्चना वर्मा, अस्मिता विमर्श का स्वर, पृ. 89
11. वीणा आलासे, तीन आत्मकथा, प्रास्ताविक
12. पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ. 57
13. डॉ.सरजूप्रसाद मिश्र, हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ, आमुख
14. प्रा.नागनाथ कोत्तापल्ले, साहित्य आणि समाज, पृ. 195 (स्त्रीवादी दृश्टिकोनातून स्त्रीसाहित्याचे विहंगमावलोकन, डॉ. विलास खोले)
15. 23.सं. डॉ. मंदा खांडगे, भारतीय भाशातील स्त्रीसाहित्याचा मागोवा–1, पृ. 77 (हिंदी ललितेतर गद्य, डॉ. जया परांजपे)
16. अर्चना वर्मा, अस्मिता विमर्श का स्त्री–स्वर, पृ.180
17. सं. राजेंद्र यादव, अर्चना वर्मा, देहरी भई विदेस, पृ.19

(Dr. M.B. Gadekar)
Digitally signed by MANOJ BHAGWAT GADEKAR
Date: 2023.02.20 18:32:37 +05'30'